1. मनुष्यता

– मैथिलीशरण गुप्त

कठिन शब्दार्थ:

मर्त्य	– नश्वर, அழியும், mortal
वृथा	– व्यर्थ, வீணான, waste
बरखानना	– प्रशंसा करना, புகழ, to praise
कृतार्थ	– संतुष्ट, திருப்தியான, satisfied
अखंड	– पूरा, முழுமையான, complete
करस्थ	– हाथ में स्थित, கையில் உள்ள, in hand
परार्थ	– दूसरे के लिए, பிறருக்காக, for others
क्षितीश	– राजा, அரசன், King
अनित्य	– अस्थायी, நிலையற்ற, temporary
अनादि	– जिसका आदि न हो, நிரந்தரமான, permanent
पशु प्रवृत्ति	– जानवरों सा बर्ताव, மிருகத்தனமான போக்கு, beastly
क्षुधार्थ	– भूख से व्याकुल, பசியால் வாட, to suffer with hunger
कूजना	– मधुर ध्वनि करना, இனிய குரல் தர, to speak in sweet voice

I. प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखिए :

1. **कवि मैथिलीशरण गुप्त पशु-प्रवृत्ति किसे कहते हैं?**
   कवि मैथिलीशरण गुप्त कहते हैं अपने लिए जीना पशु-प्रवृत्ति हैं।

2. **दधीचि ने किसके लिए अपना अस्थिजाल दिया?**
   दधीचि ने परोपकार दृष्टि से अपना अस्थिजाल दिया।

3. **कवि मैथिलीशरण गुप्त के विचार में मनुष्य कौन हैं?**
   कवि के विचार में जो मनुष्य के हित में मरता है वही मनुष्य है।

4. **कवि मैथिलीशरण गुप्त किनको उदार मानते हैं?**
   असीम विश्व में अखंड आत्म भाव भरनेवाले को कवि उदार मानते हैं।

II. कवि परिचय दीजिए :

मैथिलीशरण गुप्त हिन्दी साहित्य सेवी हैं। आपका जन्म सन् 1886 में हुआ। आप उत्तरप्रदेश के झाँसी जिले के चिरगाँव नामक गाँव में पैदा हुए। कविता करने की प्रेरणा भी आपको अपने पिता से ही प्राप्त हुई थी। व्रजभाषा के कवि होते हुए भी खड़ीबोली कविता के क्षेत्र में आपको बड़ी चमक हुई। हिन्दी के प्रथम राष्ट्र कवि हैं। आपके महाकाव्य का नाम साकेत है। आप सांसद हैं। आपने यशोधरा, जयद्रथवध, जयभारती, पंचवटी, पृथ्वीपुत्र, किसान आदि खण्ड काव्य लिखे हैं। आप एक नामी महाकवि हैं।

Scanned with CamScanner

III. कविता का सारांश लिखिए :

'मनुष्यता' कवि मैथिलीशरण गुप्त की प्रचलित कविता है। मनुष्य लौकिक दुनिया में रहनेवाला है। लौकिक दुनिया तो मिटने वाली है। इसलिए उसे भयभीत होने की जरूरत नहीं है। उसके मरते समय किसी उपयोगी एवं प्रशंसनीय कार्य को कर जाना जरूरी है। मनुष्य जाति की सेवा करते हुए मरनेवाला व्यक्ति मरकर भी जीता है। अपने लिए जीना पशु तुल्य माना जाता है। दूसरे मानव के लिए अपना तन-मन-धन-प्राण अर्पण करनेवाला ही मनुष्य है।

उदारता की महिमा सरस्वती देवी से जानी जा सकती है। यह धरती भी उदारता का पाठ सिखाती है। सारी सृष्टि उदारता की पूजा करती है। विशाल आत्मीय भावना ही उदारता है। इस भावना को भारत से विश्व के सब देश सीखते हैं।

रतिदेव, दधीचि, उशीनर के राजा और कर्ण सब महापुरुष मानव के रूप में आदर्श बने हैं। देने में जो सुख है, वह लेने में नहीं है। यह कथन उन आदर्श महान लोगों के द्वारा सत्य निकलता है। रतिदेव अपने अन्न को दूसरे को देकर खुश हुए। दधीचि ने अपना अस्तिजाल इन्द्र को दान में दिया। उशीनर के राजा ने अपने तन का माँस दान में अर्पित किया। कर्ण ने अपने कवच-कुंडल को दान में दे दिया। मानवता के ये लोग प्रति-मूर्ति माने जाते हैं।

सहानुभूति मानव जाति की विशेष संपत्ति है जो महा विभूति के रूप में परिमार्जित है। यह भाव सब जीव राशियों में बना है जिसे प्रकट करने का तरीका मानव खूब जानता है। अत: हमारा ध्येय हितार्थ एवं परमार्थ होकर जीना चाहिए। मानव मानवता के साथ भरपूर रहे तो उसका सारी दुनिया में नाम रहेगा।

IV. संदर्भ सहित भाव समझाइए :

1. विचार लो.....मनुष्य के लिए मरे।।

यह पद्यांश मैथिलीशरण गुप्त रचित मनुष्यता नामक कविता से लिया गया है।

मनुष्यता विभिन्न दृष्टिकोण पर अपनायी जा सकती है। हितार्थ एवं परार्थ होकर जीनेवालों का नाम ही अमर रहेगा। वे मरकर जीते हैं। अपने लिए जीनेवाले मानव नहीं पशु कहलाये जाते हैं। सहानुभूति के साथ रहना मानवता का दूसरा ढंग है। हमारी भावना और कामना आदर्श होनी चाहिए। इससे हमारा मन पवित्र और शुद्ध होगा। पवित्र मन में ही मानवता जगेगी। जब तक हममें मानवता रहेगी तब तक हम परोपकार चिंतन करेंगे और नाम कमाएँगे।

2. क्षुधार्थ रतिदेव.....मनुष्य के लिए मरे।

यह पद्यांश मनुष्यता नामक कविता से दिया गया है। इस कविता के सृष्टिकर्ता मैथिलीशरण गुप्त हैं।

Scanned with CamScanner

यह दुनिया नश्वर है। यहाँ हमारा जन्म हुआ है। जन्म हुए हमको मरण होने का भय नहीं होना चाहिए। रतिदेव ने अपने हाथ के अन्न को एक भूखे व्यक्ति को देकर उसकी भूख मिटायी। दधीचि ने अपने अस्थिजाल को देवों की रक्षा के लिए दिया। उशीनर के राजा ने अपना माँस दान दिया। कर्ण ने कवच-कुंडल का महादान किया। ये लोग दानी और परोपकारी के रूप में अपने को साबित कर चुके। इन लोगों में यह सबक मिलता है कि हम भी मानव होकर जिएँ। इतना ही नहीं नामी होकर जिएँ।

2. मधुमय देश हमारा

– जयशंकर प्रसाद

कठिन शब्दार्थ:

अरुण – सूरज, சூரியன், Sun
मधुमय – मधुर, இனிமையான, sweet
क्षितिज – आकाश धरती छूने सी जगह, தொடுவானம், horizon
सहारा – आश्रय, உதவி, help, favour
तामरस – सोना, தங்கம், Gold
विभा – प्रकाश, ஒளி, bright
तरुशिखा – पेड़ों की शाखाओं का अग्रभाग, உச்சிமரம், top of a tree
सुरधनु – इंद्रधनुष, வானவில், Rainbow
मलय- दक्षिणी पर्वत-हवा, தென்றல், breeze

खग – चिडिया, பறவை, bird
नीड़ – घोंसला, கூடு, nest
अनंत – समुद्र, கடல், சமுத்திரம், Sea, Ocean
हेम – स्वर्ण, தங்கம், Gold
मदिर – मस्ती पैदाकरनेवाला, போதை ஏற்படுத்தும், that creates intoxication
रजनी – रात, இரவு, Night

I. प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखिए :

1. **कवि प्रसाद के अनुसार अनजान क्षितिज को कहाँ पहुँचने पर सहारा मिलता है?**
   कवि का कथन है कि अनजान क्षितिज को मधुमय देश भारत पहुँचने पर सहारा मिलता है।
2. **अनंत की लहरें कहाँ टकराती हैं?**
   अनंत की लहरें भारत के तट पर टकराती हैं।
3. **कवि उड़ते खगों के पंखों की तुलना किससे करते हैं?**
   कवि उड़ते खगों के पंखों की तुलना सुरधनु से करते हैं।
4. **मनोहर तरुशिखा किसपर नाच रही है?**
   मनोहर तरुशिखा सरस तामरस गर्भ विभा पर नाच रही है।

II. कवि - परिचय दीजिए :

जयशंकर प्रसाद सन् 1889 में काशी में पैदा हुए। आपको संस्कृत, पालि, उर्दू, अंग्रेजी आदिभाषाएँ खूब मालूम हैं। इतिहास,

Scanned with CamScanner

दर्शन, धर्मशास्त्र और पुरातत्व के विषयों में पटु हैं। आपको दूसरों की निंदा और अपनी प्रशंसा भी पसंद नहीं हैं। आपने कविताएँ, नाटक, उपन्यास, कहानी, निबंध आदि कई साहित्यिक विषय लिखे हैं। आप भारतीय संस्कृति के प्रेमी हैं। आपकी रचनाओं में राष्ट्रीयता झलकती है। कामायनी आपका प्रमुख काव्य-संग्रह है। आपकी कृतियों में ऐतिहासिकता एवं पौराणिकता दिखाई देती है। आप सन् 1937 में स्वर्ग सिधारे।

III. कविता का सारांश लिखिए :

कविवर प्रस्तुत कविता में भारत की महिमा का वर्णन सुंदर ढंग से करते हैं। भारत एक मधुमय तथा सुंदर देश है। यहाँ ठहरने कोई भी किसी भी देश से यहाँ आवे तो उसके लिए हमारा देश स्थान देता है। सहायता की तलाशी में पड़ा हुआ क्षितिज भी यहाँ आकर आराम पाता है। इस स्वर्ण पृथ्वी पर भव्य तरुशिखाएँ नाच रही हैं। वे जीवन की हरियाली पर छिटकाये गये मंगल कुंकुम से हैं। चिडियाँ यहाँ घोंसला बनाते हुए आराम से सुखी हैं। यहाँ पानी जोर से बरसता है। यहाँ की नदियाँ समतल धरती पर बहकर समुद्र में संगम होती हैं। समुद्र की लहरें भारत के किनारे पर टकराकर प्रसन्न होती हैं। सूरज स्वर्ण कलश-सा पूरब की दिशा में निकलकर सबको सुख पहुँचाता है। नभ के उज्जवल तारे मदिरा पीकर ऊँघते हुए रात भर टिमटिमाते हैं।

कवि ने चन्द्रगुप्त नामक नाटक में इस कविता का प्रस्तुतिकरन किया है। यह गीत कार्नेलिया से गाया जानेवाला है, उस नाटक में

विदेश-स्त्री से इस देश की महिमा बोली गयी है जिससे देश का महत्व और बढ़ जाता है। सचमुच भारत की प्रकृति बहुत मनोहर है। कवि ने भारत के हर प्राकृतिक दृश्य का वर्णन बहुत सुन्दरता से किया है, वह देखते ही बनता है।

IV. संदर्भ सहित भाव समझाइए :

1. लघु सुरधनु से पँख.....नीड़ निज प्यारा।

जयशंकर प्रसाद ने 'मधुमय देश हमारा' नामक कविता लिखी है। यह पद्यांश उसी कविता से लिया गया है।

कवि हमारे देश की महिमा का वर्णन बड़े मनोहर ढंग से करते हैं। भारत संसार का गुरु है। वह सब देशों से प्रशंसनीय एवं सराहनीय है। पक्षियों का कलरव मधुमय संगीत सा है। उनके पंख छोटे इन्द्रधनुष से हैं। वे अपने स्वतंत्र ढंग से पर फैलाते हुए शीतल मलय के हवा के सहारे उड़ते हैं। वे भारत को अपना घोंसला मानकर खुश होते हुए उडते हैं।

2. हेम कुंभ ले उषा.....रजनी भर तारा।

महाकवि प्रसाद ने 'मधुमय देश हमारा' नामक सुंदर कविता प्रस्तुत की है। पद्यांश उस कविता का एक अंश है।

भारत के प्राकृतिक दृष्य के कवि का वर्णन मार्मिक ढंग से बनाया गया है। भारत पवित्र भूमि है। उसकी प्रशंसा सब लोग करते हैं। इस पद्य में हमारी मातृ भूमि की महिमा गायी गयी है। सुबह का समय सबको मनोहर लगता है। नभ के तारे रात भर

Scanned with CamScanner

अर्ध निद्रा पर रहे, अब नदारत हैं। सुबह के समय पर हर कहीं प्रकाश ही प्रकाश है। सबको इससे सुख और खुशी है।

3. श्यामल बादल

– महादेवी वर्मा

कठिन शब्दार्थः

बादल – मेघ, மேகம், cloud
जनक – जन्मदाता, தந்தை, father
सुधा – अमृत, அமுதம், Elixir
सुधाकर – चन्द्रमा, நிலவு, Moon
सहोदर – सगाभाई, சகோதரர், brother
व्योम – आकाश, ஆகாயம், sky
वात – हवा, காற்று, Air
संग – साथ, உதவி, உடன், with the help of
चंचल – चलायमान, அலைபாயும், unsteady
परिधान – कपड़ा, துணி, cloth
आभूषण – गहना, நகை, Jewel
पलक – नयनपट, இமை, eye-brows
विद्युत – बिजली, மின்னல், மின்சாரம், electricity
झलमल – चमक-दमक, ஒளி, bright
तृषित – प्यासा, தாகமுள்ள, thirst
निहारना – देखना, பார்த்தல், to see
बहकाना – पथ बदलाव करना, வழிமாற்ற, to deviate

समाना – भरना, நிரப்ப, to fill
उज्जवल – दीप्तिमान, பிரகாசமான, bright
चिरंजीवी – दीर्घायु, சாகாவரம்பெற்ற, அழியாத, immortal

I. प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखिए :

1. **बादल के जनक कौन और सहोदर कौन-कौन हैं?**
   बादल के जनक सागर और सहोदर सुधा व सुधाकर हैं।

2. **कवयित्री महादेवी वर्मा बादल के श्याम तन का परिधान किसे कहती हैं?**
   कवयित्री महादेवी वर्मा इन्द्रधनुष को श्याम तन का परिधान कहती हैं।

3. **तृषित धरा ने जब पुकारा, तब बादल नयनों में क्या लेकर भू पर उतरे?**
   तृषित धरा ने जब पुकारा, तब बादल नयनों में जल लेकर भू पर उतरे।

4. **धरती के रोम-रोम में कौन समा हुआ है?**
   धरती के रोम-रोम में चिर-उज्जवलता समा हुई है।

II. कवि - परिचय दीजिए :

श्रीमती महादेवी वर्मा सन् 1907 में पैदा हुईं। आपको आधुनिक मीरा कहते हैं। आप सुशिक्षित, सभ्य और संस्कृत हैं। आप प्रयाग के महिला-विद्या पीठ की प्राचार्या रहीं। चाँद नामक

Scanned with CamScanner

पत्रिका की संपादिका रह गयी हैं। आपने नीहार, रश्मि, नीरजा, सांध्यगीत, यामा, दीपशिखा आदि रचनाएँ प्रकाशित की हैं। सप्तपद में अतीत के चल-चित्र, और स्मृति की रेखाएँ नामक दो गद्य-ग्रंथ भी प्रकाशित हुए हैं। आप छायावादी तथा रहस्यवादी कवयित्री हैं। आपके शब्द चित्र प्रचलित हैं। आप सन् 1989 में स्वर्ग सिधारे।

III. कविता का सारांश लिखिए :

महादेवी वर्मा एक रहस्यवादी एवं छायावादी कवयित्री हैं। आपकी श्रेष्ठ कविताओं में एक हैं श्यामल बादल। बादल का जन्म सागर से होता है। सूरज की किरणें सागर के पानी को भाप बना देती हैं। भाप आकाश को पहुँचता है। भाप फिर काले बादलों में परिवर्तित होता है। वे चंद्रमा को सहोदर बनाकर पवन के साथ चलायमान रहते हैं। नभ में इंद्रधनुष को वस्त्र बनाकर, किरणों को गहना बनाते हैं। बादल अनेक सपनों के साथ फिरते हैं। बादल करुणामयी हैं। वर्षा बनकर भूमि को गीला बनाते हैं। वर्षा नदियाँ और जलाशयों का रूप धारण करता है। भूमि में नदी, नाले, झील, तालाब, कुआँ आदि जलाधार के रूप बनते हैं। भूमि को तृप्त कर देते हैं। बादल धरती की इतनी सेवा कर कवयित्री की आँखों से ओझल हो जाते हैं। इसलिए कवयित्री उन्हें ढूँढ़ती-फिरती हैं।

IV. संदर्भ सहित भाव समझाइए :

1. तृषित धरा ने.....वह श्यामल बादल?

यह पद्यांश महादेवी वर्मा रचित 'श्यामल बादल' कविता से लिया गया है।

धरा की तृष्णा तथा बादल के प्रति उसकी पुकार एवं बादल की वर्षा रूपी सहानुभूति एवं दया यहाँ वर्णित हैं। बादल पानी बरसाकर भूमि का ताप निवारते हैं। प्रकृति की करुणा यहाँ बतायी गयी है।

2. हम बादल कहते.....चिरजीवी बादल।

यह पद्यांश महादेवी वर्मा कृत 'श्यामल बादल' का है।

नदी और जलाशय की हर एक बूँद का जन्म-स्थान बादल ही समझा जाता है। धरती पानी की बूँदों से खुश हो जाती है। करुणामूर्ति बादल हमेशा के लिए जीते रहें। बादलों सा मानव रहे तो देश की माँ कितनी खुशी में रहेगी। मानव बादलों से परोपकार का पाठ ग्रहण करे।

4. चिरंतन जीवन -चक्र

– सुमित्रानंदन पंत

कठिन शब्दार्थ:

निर्भय – निडर, பயமின்றி, without fear
विचरना – चलना-फिरना, அலைய, to roam about
विचलित – अस्थिर, அலைபாயும், wavery
निज – अपना, தனது, self

Scanned with CamScanner

अविनश्वर – अक्षय, அழியாத, immortal
निखिल – संपूर्ण, முழு, complete
सचराचर – चर और अचर के साथ, நடமாடி,நிலையாக, to be clear after confusion
विरक्त – उदासीन, வேதனை, frustrated
अनुरक्त – आसक्त, பற்று, attachment
परिधि – घेरा, சுற்றிவளைக்க, to ponder
उर – हृदय, இதயம், heart
वक्षस्थल – छाती, மார்பு, chest
भीतर – अन्दर, உள்ளே, inside
सहचर – संगी, தோழன், friend
सेवक – नौकर, சேவகன், servant
सहृदय – दयालु, கருணையுடன், with sympathy
अवगुण – बुराई, தீமை, harmful
हरना – दूर करना, விலக்க, to remove
अक्षय – अविनाशी, அழியாத, immortal
मृण्मय – मिट्टीका बना हुआ, மண்ணாலான, created with soil
नश्वर – नष्ट ही जानेवाला, அழியும், Mortal
चिरंतन – शाश्वत, அழியாத, undestroyable

I. प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखिए :

1. कवि पंत के अनुसार मानव को किसपर निर्भर रहना चाहिए?

कवि पंत के अनुसार मानव को अपनी आत्मा का अवलंबन करना चाहिए।

2. जग-जीवन के बारे में कवि पंत का विचार क्या है?

जग-जीवन गुण-दोष युक्त है। कवि पंत का विचार यही है।

3. 'चिरंतन जीवन-चक्र' कविता के अनुसार बढ़ती घृणा को किससे भरा जा सकता है?

नफरत को प्रेम से परिवर्तित किया जा सकता है।

4. कवि पंत के अनुसार दूसरों का अवगुण कैसे दूर किया जा सकता है?

अपने अच्छे बर्ताव से दूसरों के अवगुणों को दूर किया जा सकता है।

II. कवि - परिचय दीजिए :

सुमित्रानंदन पंत की पैदाईश सन् 1900 को हुई। आप छायावाद के कवि हैं। आपने अपने ज्ञान को स्वयंभू होकर प्राप्त कर लिया। पल्लव, वीणा, गुंजन, युगवाणी, ग्राम्या, स्वर्ण किरण, रजतशिखर, शिल्पी आदि आपके कविता-संग्रहों में कुछ रचनाएँ हैं। काव्य के लिए आपने ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त किया। आप सन् 1979 में स्वर्ग सिधारे।

Scanned with CamScanner

III. कविता का सारांश लिखिए :

सुमित्रानंदन पंत छायावादी कवि हैं। यह आपकी प्रसिद्ध कविता है। आप इसमें बताते हैं कि मानव का जीवन-निर्वाह कैसे हो जाए। मानव को दुर्घटनाओं का मुकाबला करना चाहिए। उसे निडरता से सबका सामना करना चाहिए। इसका मार्गदर्शन ही इसमें कवि कराते हैं। मानव को आत्म विश्वास के साथ जीना चाहिए। मानव सत्य का पालन करे। सत्य की रक्षा करे। सत्य के लिये जीना चाहिए। जीवन में सुख व दुख से बचकर दोनों का समन्वयन करते हुए रहना बेहतर है।

जीवन का केन्द्र ही मन है। मन का केन्द्र ही जीवन है। मनको काबू में रखना है। शांत, क्षमाशील, स्नेह, धीर और सहृदय होकर रहना जरूरी है। जग-जीवन में अच्छाई व बुराई का सामना करना है। अपनी अच्छाइयों के द्वारा दूसरों की बुराइयों को दूर करना चाहिए। नफरत को प्यार के रूप में परिवर्तित कर देना चाहिए। एक दिया दूसरे दिये को जलाता है। वैसा ही प्रेम का विकास कर देना आवश्यक है। तन मृत्यु का है। आत्मा अमर है। जीवन चक्र चिरंतन है। इस कविता में कवि हर मानव की जीवनोन्नति के बारे में बताते है।

IV. संदर्भ सहित भाव समझाइए :

1. बन शांत.....पर अवगुण हर!

यह पद्यांश सुमित्रानंदन पंत जी की कविता 'चिंरतन जीवन-चक्र' से उद्धृत है।

मानव के जीवन में सुख-दुख आते हैं। वह गुणी और अवगुणी होता है। उसके जीवन में अच्छाइयाँ और बुराइयाँ होती हैं। पर मानव अपने मन को तटस्थ रखे तो उसकी उन्नति होगी। शांत, धीर, क्षमतापूर्ण, स्नेही, सहृदय, सहचर बनकर रहना है। जगजीवन में गुणोंमुख करते हुए आगे बढ़ना चाहिए। अवगुणों से दूर रहना जरूरी है। कवि का संदेश यही है।

2. विश्चल आत्मा.....हँस-हँस मर।

यह पद्यांश पंत जी का पद्य 'चिरंतन जीवन-चक्र' से उद्धृत है। मानव लौकिक सुख-दुख का अनुभव करता है। लौकिक का सुख-दुख नश्वर है। मानव भी नश्वर है। उसका शव भूमि की मिट्टी में दफ्नाया जाता है। मिट्टी पर जन्म होकर मिट्टी में मर जाता है। मगर एक बात शाश्वत है कि उसकी आत्मा अमर है। जीवन-चक्र शाश्वत है। मानव जीवन में घटित मरण व जीवन का मुकाबला करे। मन-कर्म-वाणी में शुद्ध होना हरेक मानव का फर्ज है।

5. अनंत द्वार

– सूर्यकांत त्रिमाठी निराला

कठिन शब्दार्थ:

मृदुल – कोमल, மிருதுவான, soft
पात – पत्ता, இலை, leaf
गात – अंग, பாகம், part

Scanned with CamScanner

प्रत्यूष – प्रभात, காலை, morning

तंद्रालस – ऊँघ के कारण आलसी, சோம்பலான, lazy

लालसा – चाह, விருப்பம், wish

सहर्ष – खुशी से, சந்தோஷத்துடன், with happiness

I. प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखिए :

1. निराला जी क्यों ऐसा कहते हैं कि उनका अंत अभी न होगा?

कवि मानते हैं कि उनका आगमन अभी-अभी हुआ है। अत: कहते हैं कि उनकी समाप्ति अभी न होगी।

2. निराला पुष्प-पुष्प से किसे खींच लेंगे?

निराला पुष्प-पुष्प से तंद्रालस लालसा खींच लेंगे।

3. निराला कैसा प्रत्यूष जगाएँगे?

निराला निद्रिन कलियों पर, अपने स्वप्न मुलायम-हाथों से फेरकर एक सुंदर प्रत्यूष जगाएँगे।

II. कवि - परिचय दीजिए :

कविवर निराला का जन्म सन् 1898 में हुआ। आपको मुक्त-छंद के पैदाइश-कर्ता कहा जाता है। आपकी भाषा संस्कृत है। अनामिका, सेवा, नये पत्ते, परिमल आदि आपकी कविता संग्रह हैं। आपके उपन्यास अप्सरा, अलका, कुल्लीभाट और प्रभावी हैं। 'समन्वय' नामक पत्रिका के संपादक हैं। सन् 1961 में आप स्वर्ग सिधारे।

III. कविता का सारांश लिखिए :

सूर्यकांत त्रिपाठी निराला ने मुक्त-छंद की कविताएँ लिखने की शुरुआत कीं। आप बडे दार्शनिक थे। आपकी यह कविता 'अनंत द्वार' बहुत प्रसिद्ध है।

कवि कहते हैं कि यह संसार वसंत-ऋतु के वन का सा है। मानव-जीवन रूपी वन में अभी वंसत का दिखाव है। वन में जहाँ-तहाँ नई कलियाँ, डालियाँ आदि दिखाई देती हैं। पत्ते हरियाली हैं। निद्रित कलियों पर एक सुंदर सुबह हुई है। कवि हर एक पुष्प से चंद्रालस को खींचकर, अपना जीवनामृत खींचने को तैयार हैं। कवि अपने कार्य को असीम कहते हैं। मन आशातीत हो और उत्सुक हो। इसमें मन लगा कर्म सक्षम हो जाएगा। कवि इस कविता में हमें प्रोत्साहित करते हैं।

IV. संदर्भ सहित भाव समझाइए :

1. हरे-हरे ये पात.....प्रत्यूष मनोहर।

निराला का पद्य 'अनंत द्वार' है। यह पद्यांश उसीका एक अंश है।

पेड़-पौधों के पत्ते हरे हैं। डालियाँ व कलियाँ कोमल हैं। निद्रा में होनेवाली कालियों पर कवि एक मनोहर प्रभात जगाना चाहते हैं। जीवन हरा-भरा रहे। जीवन आशातीत हो जाए। कवि का कहना भी यही है।

Scanned with CamScanner

6. प्यार

– हरिवंशराय बच्चन

कठिन शब्दार्थ:

पर	–	पंख, இறக்கை, wing
रंगीन	–	चमकदार, மின்னுகிற, colourful
कंठ	–	गला, கழுத்து, neck
डैना	–	पंखा, சிறகு, wing, feather
जान	–	प्राण, உயிர், life
सरोकार	–	संबंध, தொடர்பு, relation

I. प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखिए :

1. 'बच्चन' किसपर कविता लिखना चाहते थे?

'बच्चन' चिड़िया पर कविता लिखना चाहते थे।

2. क्या 'बच्चन' के शब्दों में चिडिया के कंठ का संगीत है?

नहीं, कवि के शब्दों में चिडिया के कंठ का संगीत नहीं है।

3. 'बच्चन'चिड़िया पर कविता क्यों लिखना चाहते थे?

'बच्चन' चिड़िया पर कविता लिखना चाहते थे क्योंकि उनको चिड़िया पर प्यार है।

4. 'बच्चन' अंत में मौन क्यों हुए?

''प्यार और शब्दों का संबंध नहीं है''– ऐसे नये अनुभव में कवि मौन हो गए।

II. कवि – परिचय दीजिए :

हरिवंशराय 'बच्चन' सन् 1907 में पैदा हुए। आपने इंग्लैंड से डाक्टरेट की उपाधि पाई। आप भारत–सरकार के विदेश–मंत्रालय में कार्यकर्त्ता रहे। आप हालावाद के जन्मदाता थे। हालावाद का अर्थ है कि हिन्दू–मुस्लिम की एकता की संस्थापना करनी है। आपके साथ ही हालावाद का अंत हो गया। हृदय के सरल उद्‌गारों को व्यक्त करने में आपको जीत हुई है। आपकी रचनाएँ मधुबाला, मधुशाला, मधुकलश आदि काव्य संग्रह में संगृहीत हैं। आप सन् 2003 में स्वर्ग सिधारे।

III. कविता का सारांश लिखिए :

'बच्चन' का पद्य 'प्यार' बहुत प्रसिद्ध एवं दार्शनिक माना जाता है। प्यार लेने की वस्तु नहीं है। वह देने की वस्तु है। वह अनुभूति करने योग्य है। प्यार दुनिया का शासक है। अहिंसा का मूलतत्व है। सत्य का दूसरा दृष्टिकोण है।

इस कविता में कवि एक चिड़िया से बोलते हैं। आपकी अभिलाषा पक्षी के बारे में लिखनी है। आपसे चिड़िया प्रश्न का शर बाँधती है। उसकी रंगनी क्या है? उसका क्या संगीत है? उसकी कैसी उडान है? इन सवालातों के जवाब देने में कवि असमर्थ रह गये। कवि उससे इतना कह देते हैं कि उससे उनका लगाव हैं। बड़ा प्यार होता है। यह तो दार्शनिक उत्तर है। अनुभूति से प्यार की पहिचान कर सकते हैं। उनकी हालत विचित्र पूर्ण थी। इस कविता से उनके मन में कितनी अनुभूति हैं? प्यार शब्द में कितना तकलुफ करते हैं। यह सब अपने आप पता चलता है।

Scanned with CamScanner

IV. संदर्भ सहित भाव समझाइए :

1. तब तुम मुझपर.....मौन हो गया।

'बच्चन' का भावपूर्ण एवं दार्शनिक पद्य है, प्यार। यह पद्यांश उसी कविता का है।

कवि को चिडिया से मुलाकात होती है। वे उसे प्यार से देखते हैं। उस चिड़िया ने उनसे एक नहीं अनेक प्रश्न पूछे। उन सब का उत्तर सिर्फ उनके पास एक ही है कि प्यार। चिड़िया उनसे पूछती है कि उनके शब्द उसकी क्षमता के बाहर हैं। ऐसी हालत में इस कविता को लिखने की क्या जरूरत है? कवि के प्यार के जवाब का प्रत्युत्तर चिड़िया कहती है कि प्यार का, शब्दों से संबंध-ही नहीं। कवि चिड़िया की इस नई दृष्टि को पाकर चुप हो गये।

7. काँटों में राह बनाते हैं

– रामधारी सिंह 'दिनकर'

कठिन शब्दार्थ:

विपत्ति	–	संकट, ஆபத்து, danger
कायर	–	डरपोक, கோழை, coward
सूरमा	–	वीर, வீரன், brave man
विचलित	–	अस्थिर, நிலையற்ற, wavery
धीरज	–	धैर्य, தைரியம், bravery
विघ्न	–	बाधा, தடை, obstacle

राह	–	रास्ता, வழி, way
मग	–	मार्ग, வழி, பாதை, pathway
खम ठोंक	–	दृढ़ता पूर्वक, உறுதியான, iron-hearted
प्रखर	–	खरा, उत्तम, தீவிர, நல்ல, severe, good
वर्तिका	–	बत्ती, விளக்கு, lamp

I. प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखिए :

1. **दिनकर के अनुसार विपत्ति किसको दहलाती है?**
   दिनकर के अनुसार विपत्ति डरपोक को दहलाती है।
2. **क्या आदमी के मग में कोई विघ्न टिक सकता है?**
   नहीं, आदमी के मग में कोई विघ्न टिक नहीं सकता।
3. **पत्थर कब पानी बनता है?**
   मानव के जोर लगाते समय पत्थर पानी बनता है।
4. **'काँटों में राह बनाना' – इसका तात्पर्य क्या है?**
   काँटों में राह बनाने का अर्थ, विघ्नों को पार करना है।

II. कवि – परिचय दीजिए :

दिनकर हिन्दी के दूसरे राष्ट्रकवि हैं। आप सन् 1908 में पैदा हुए। आपका चाव इतिहास का विषय है। आपकी कविताएँ ओजपूर्ण हैं। आपने कुरुक्षेत्र, रश्मिरथी, उर्वशी आदि प्रबंध काव्यों की रचना की है। आप सांसद थे। आप भागलपुर विश्वविद्यालय के उपकुलपति भी रहे। आपकी कृतियों में राष्ट्रीय भावना कूट-कूटकर भरी हुई है। आप गद्यकार भी थे। आप सन् 1974 में स्वर्ग सिधारे।

Scanned with CamScanner

III. कविता का सारांश लिखिए :

दिनकर राष्ट्र कवि हैं। राष्ट्रीय भावुक कवि आप हैं। प्रगति वादी कवि हैं। धैर्य, साहस, हिम्मत आदि हमें देने में समर्थक कवि हैं। 'काँटों में राह बनाते हैं' नामक इस पद्य के रचयिता हैं।

कवि इस कविता में बताते हैं कि जीवन यथार्थ है। जीवन में दर्शन है। जीवन समस्यामूलक है। समस्याओं का भरा हुआ जीवन मानव के लिए नया है। वह शिष्य बनकर जीने की कला जानता है। धैर्य से सब समस्याओं का सामना करना जरूरी है। डरपोक बनना, नहीं चाहिए। क्योंकि समस्याएँ स्थिर नहीं होतीं। आनेवाली समस्या टिकाऊ नहीं है। मानव चाहे तो पहाड़ को भी मिट्टी के कण बना सकते हैं। भगवान के सृष्टिकर्ता मानव है। इसलिए उसमें शक्ति का भरमार है। अपनी शक्ति से क्षमता प्राप्त कर सकता है। इसलिए अच्छे गुणों को अपनाना चाहिए। इसकेलिए अपने को पहचानकर जीवन में प्रकट होनेवाले काँटों के बीच राह बनाना चाहिए। मानव को आशातीत रहना आवश्यक है।

IV. संदर्भ सहित भाव समझाइए :

1. सच है विपत्ति.....नहीं धीरज खोते।

कवि रामधारी सिंह दिनकर कृत 'काँटों में राह बनाते हैं' नामक पद्य का यह पद्यांश है।

जीवन विपत्तियों से भरा हुआ है। मानव को उत्सुकता एवं आशातीत होकर रहना चाहिए। वह हर समस्या का समाधान

ढूँढे। समस्या को पार करके हँसमुख होते हुए जीना जरूरी है। जब विपत्ति सामने आती है तब वीर मानव निडरता से उसका सामना करता है। कायर काँपता है। उसके जीने से न जीना अच्छा है। कायरता मानव का लक्षण नहीं है।

2. गुण बड़े एक से.....उजियाली हो।

कवि दिनकर ने 'काँटों मे राह बनाते हैं' नामक कविता लिखी है। यह पद्यांश उसीमें से लिया गया है।

मानव गुणों का सागर माना जाता है। ईश्वर ने उसके कई गुण दिये। हरे पत्ते मेहंदी में लाल रंग छिपा हुआ है। वैसे ही मानव में सदगुण छिपे हुए हैं। मानव उन अच्छे गुणों को अपने में से बाहर लावे तो उन्नति प्राप्त करेगा। उसे वैसा ही करना है, यही कवि की चाह है।

8. निश्चित मार्ग

– सुभद्राकुमारी चौहान

कठिन शब्दार्थ:

गत – पिछला, சென்ற, past
तरल – चंचल, துடிப்பான, enthusiastic
नभ – आकाश, ஆகாயம், Sky
रज – धूल, மண் துகள், soil dust
भ्रांति – भ्रम, பிரமை, illusion

Scanned with CamScanner

II. किन्हीं दो रसों को सोदाहरण समझाइए :- 10

1. श्रृंगार-रस

काम के अंकुरित होने को "श्रृंगार" कहते हैं, इसी से प्रेम भाव से युक्त रस श्रृंगार कहलाता है। यह भाव सृष्टि में सबसे अधिक व्यापक है। प्रेमी-प्रेमिका का मिलना, बिछडना आदि का वर्णन इसमें होता है। मानसिक भाव के मूल आधार सुख और दुख हैं। मिलन में सुख और विरह में दुख का वर्णन इस रस में होता है। साथ ही इस रस में दो विपरीत भावों का भी वर्णन होता है जो इस रस की सबसे बड़ी विशेषता है। इसी से यह "रसराज" भी कहा जाता है। इसके दो पक्ष हैं- संयोग और विप्रलंभ। संयोग में दर्शन, मिलन, वार्तालाप और स्पर्श आदि का वर्णन रहता है। विप्रलंभ वियोग को कहते हैं। यह तीन प्रकार का होता है- पूर्वराग, मान और प्रवास। प्रेमी-प्रेमिका की वास्तविक भेंट से पूर्वचित्र-दर्शन अथवा गुण-श्रवण से उत्पन्न प्रेम पूर्वराग कहलाता है। नायिका का रूठना 'मान के अन्तर्गत आता है। मिलन के उपरान्त विदेश-गमन को प्रवास कहते हैं। इसके अतिरिक्त नायक-नायिका का मिलन यदि सदा के लिए असंभव हो जाय, तो उसे 'करु विप्रलंभ' कहेंगे।

स्थाई	-	प्रेमपात्र-नायक या नायिका
उद्दीपन विभाव	-	नायक या नायिका की वेशभूषा, विभिन्न चेष्टाएँ, वसंत ऋतु, सुन्दर प्राकृतिक दृश्य, चंद्र, चाँदनी आदि।
अनुभाव	-	मुख का खिलना, मुस्कुराना, एकटक देखना, हावभाव, अनुरागपूर्ण आलाप, भृकुटि भंग, कटाक्ष आदि।
संचारी भाव	-	प्रायः सभी संचारी इसके अन्तर्गत आ जाते हैं।

संयोग श्रृंगार का उदाहरण :-

चितवत चकित चहुँ दिसि सीता। कहँ गये नृप किसोर मन चिंता॥
लता ओट तब सखिन लखाये। स्यामल गौर किसोर सुहाये॥
देखि रूप लोचन ललचाने। हरषे जनु निज निधि पहचाने॥

यहाँ आश्रय सीता, आलंबन राम और उद्दीपन लता मण्डप हैं। "लखाये" अनुभाव है। "सुहाये, लोचन ललचाने, हरषे" आदि संचारी भाव हैं। इस प्रकार भाव, विभाव, अनुभाव और संचारी भाव से पुष्ट होकर संयोग श्रृंगार का रस पूर्ण हुआ है।

वियोग श्रृंगार का उदाहरण :-

1. शान्ति स्थान महान करव मुनि के पुण्याश्रमोद्यान में,
   बाह्यज्ञान विहीन लीन अति ही दुष्यन्त के ध्यान में।
   बैठी मौन शकुन्तला सहज थी सौन्दर्य से सोहती,
   मानो हो कह चित्र में खचित-सी थी चित को मोहती।

यहाँ आश्रय शकुंतला, आलंबन दुष्यंत, उद्दीपन शान्त तपोवन और दुष्यंत का ध्यान है। "बैठी मौन" अनुभाव है। "बाह्य ज्ञान विहीन, लीन अति, सोहती" आदि संचारी भाव हैं।

2. भूषन-बसन बिलोकत यिस के।
   प्रेम-बिबस मन, कंप पुलक तनु, नीरज-नयन नीर भरे पिय के।
   सकुचत कहत, सुमिरि उर उमगत, सीले सनेह सुगुन-गन तिय के।

2. करुण रस

प्रिय वस्तु अथवा इष्ट वस्तु के नष्ट हो जाने से या प्रिय व्यक्ति के मर जाने से हृदय में उत्पन्न विषाद का भा व करुण रस की व्यंजना कराता है।

शोक मन को गहराई से छूता है इसलिए कुछ विद्वानों ने करुण रस को भी बहुत महत्व प्रदान किया। कवियों में भवभूति इसके व्यापक प्रभाव से परिचित थे। करुणा का समावेश विप्रलंभ श्रृंगार में भी होता है। पर दोनों में अन्तर यह है कि वियोग श्रृंगार में प्रेमी-प्रेमिका एक दूसरे से दूर रहने पर भी मिलने की संभावना बनी रहती है, जबकि करुण में मृत्यु होने से मिलने की आशा नष्ट हो जाती है।

स्थायी भाव	-	शोक
आलंबन	-	प्रिय वस्तु या व्यक्ति का नाश, मृत्यु या लाश।

Scanned with CamScanner

उद्दीपन - मृत शरीर, प्रिय व्यक्ति की मृत्यु के पश्चात् होनेवाली दाह क्रिया, उसके गुणों का स्मरण ।

अनुभाव - छाती पीटना, पछाड खाना, मूर्च्छा, रुदन, विलाप आदि ।

संचारी भाव - मोह, विषाद, जड़ता, उन्माद, निर्वेद ।

उदा :-

1. पोंछ निज नेत्र-नीर अंचल के पट से
जीजी गई उसके समीप उठ झट से
और पुचकार जानकी को गोद में उठा लिया ।
एकाएक अरथी पर, माँ को पडी देखकर
जीजी की गोद से कूद पडने के लिए, करके करुण रोर रोना
रोकर लगाकर जोर पूछा, "जाते हैं कहाँ वे अरे माँ को लिये ?"

जानकी आश्रय है और उसकी माँ का शव आलंबन है । अर्थी और जीजी का नेत्र-नीर आदि उद्दीपन हैं । गोद से कूद पडना अनुभाव है । "माँ को कहाँ ले जाते हैं" पूछने में भय संचारी भाव है ।

2. तरुण तपस्वी-सा वह बैठा, साधन करता सुर-श्मशान,
नीचे प्रलय-सिंधु-लहरों का, होता था सकरुण अवसान ।

3. भयानक रस

भयप्रद दृश्य को देखने, सुनने, स्मरण करने से उत्पन्न भय भयानक-रस की व्यंजना कराता है । किसी डरावने जन्तु के देखने, घोर अपराध के लिए दण्ड पाने की कल्पना, शक्तिशाली विरोधी से काम पडने आदि से उत्पन्न मन की व्याकुलता से यह भावना पैदा होती है ।

स्थायी भाव - भय
आश्रय - भयभीत व्यक्ति
आलंबन विभाव - भयप्रद जीव, वस्तु, दृश्य आदि ।
उद्दीपन विभाव - दृश्य की भीषणता को बढानेवाले व्यापार ।

अनुभाव - स्वेद, कम्प, रोमांच, विवर्ण्य, पलायन, मूर्छा आदि ।

संचारी भाव - सम्भ्रम, आवेग, शंका, चिन्ता आदि ।

उदा :-

1. आगि आगि आगि, भागि भागि चले जहाँ तहाँ,
धीय को न माय, बाप पूत न सँभारहीं ।
छूटे बार, वसन उघारे, धूम-धुंध अंध,
कहैं बारे बूढे "वारि"-"वारि" बार-बारहीं ।

लंका में हनुमान के द्वारा लगी आग के कारण लंकावासियों की व्याकुलता का वर्णन यहाँ हुआ है ।

2. लपट कराल ज्वाल जालमाल दहूँ दिसि,
धूम अकुलाने पहिचाने कौन काहि रे ।
पानी को लालत बिललात जरे गात जात,
परे पाइमाल जात भ्रात तू निबाहि रे ।

4. अद्भुत रस

किसी असाधारण वस्तु को देखकर आश्चर्य के कारण हृदय में विशेष प्रकार का कौतूहल होता है । इसी आश्चर्य के भाव के वर्णन में अद्भुत रस का संचार होता है । चमत्कार को आचार्यों ने रस का सार कहा है । इसलिए वे अद्भुत रस को प्रमुखता देते हैं । प्रायः पाठक या श्रोता ही इस रस के आश्रय होते हैं । इसलिए इस रस में आश्रय के अनुभाव आदि की आवश्यकता नहीं होती । आलंबन का वर्णन ही पर्याप्त होता है ।

स्थायी भाव - विस्मय अथवा आश्चर्य
आलंबन विभाव - अलौकिक वस्तु या दृश्य
उद्दीपन विभाव - आलंबन की विस्मयकारी चेष्टाएँ
अनुभाव - नेत्र विस्फारित होना, रोमांच होना, स्तंभित होना आदि ।

Scanned with CamScanner

संचारी भाव - चापल्य, हर्ष, औत्सुक्य, शंका, स्वेद आदि ।

उदा :-

1. नटवर ! है अनुपम तव माया ।
   सकल चराचर एक सूत्र में तूने बाँध नचाया ।
   षट ऋतु सरस, सूर्य, शशि, तारे, भू, गिरि, विपिन बनाया ।
   नीले नीले रुचिर गगन में कैसा रास रचाया !

इस कविता में ईश्वर की रची हुई सृष्टि आलंबन है । उसके विविध पदार्थ जैसे ऋतु, सूर्य, चाँद, तारे आदि उद्दीपन हैं । इन्हें देखकर कवि के मन में आश्चर्य का भाव पैदा होता है । इस प्रकार आलंबन और उद्दीपन का यह वर्णन मात्र अद्भुत रस का संचार करने में समर्थ हुआ ।

2. सभी रसायन हम करी, नहीं नाम सम कोय ।
   रंचक घट में संचरै, सब तन कंचन होय ॥

5. वीभत्स रस

रुधिर, अस्थि, माँस, मज्जा आदि घृणित वस्तुओं को देखने अथवा श्रवण करने से उत्पन्न घृणा वीभत्स-रस की व्यंजना कराती है । रोग से पीडित अंगों पर दृष्टि डालते समय घृणा उत्पन्न होती है । वीभत्स दृश्यों के अवलोकन से संसार की निस्सारता का आभास मिलता है, इससे विरक्ति की भावना पैदा होती है ।

स्थायी भाव	-	जुगुप्सा या घृणा ।
आश्रय	-	घृणित वस्तु का अवलोकन करनेवाला ।
आलंबन विभाव	-	घृणित वस्तु, दृश्य या व्यक्ति ।
उद्दीपन विभाव	-	दुर्गन्ध, कुरूपात, कीडे-मकोडे आदि ।
अनुभाव	-	संकोच, मुख मोडना आदि ।
संचारी भाव	-	आवेग, व्याधि, ग्लानि, अपस्मार, मोह आदि ।

उदा :-

1. सिर पर बैठ्यो काग आँख दोउ खात निकारत ।
   खींचत जीभहि सियार अतिहि आनन्द उर धारत ॥

गिद्ध जाँघ को खोदि-खोदि कै माँस उचारत ।
स्वान आँगुरिन काटि-काटि कै खात बिचारत ॥
बहु चील नोचि लै गात तुच मोद भरयो सबको हियो ।
मनु ब्रह्म-भोज जिजमान कोउ आज भिखारिन को दियो ॥

श्मशान के इस वर्णन में श्मशान का दृश्य आलंबन है । मृतको के अंगों को कौए, गिद्ध, कुत्ते आदि के द्वारा खाया जाना उद्दीपन है । स्वयं पाठक ही आश्रय है । अतः इसमें अनुभाव का वर्णन नहीं होता । इसी प्रकार संचारी भावों का भी वर्णन नहीं होता । यहाँ केवल विभाव आदि से जुगुप्सा स्थायीभाव की व्यंजना बीभत्स-रस में व्यक्त हुई है ।

2. विविध रंग की उठति ज्वाल, दुर्गन्धनि महकति ।
   कहूँ चरबी सौं चटपटाति, कहुँ दह दह दहकति ।
   कहँ सृगाल कोउ मृतक-अंग पर घात लगावत ।
   कहुँ कोउ सब पर बैठि गिद्ध चट चोंच चलावत ॥

III. किन्हीं दो अलंकारों को सोदाहरण समझाइए :- 10

1. अनुप्रास

जब किसी वाक्य के शब्दों में एक या कई व्यंजन एक से अधिक बार एक ही क्रम से आवें तब अनुप्रास अलंकार होता है । स्मरण रखना चाहिए कि व्यंजनों के बार-बार आने से ही अनुप्रास अलंकार होता है ।

जैसे :-

कल-कल कोमल कुसुम कुँज पर मधु बरसाने वाला कौन ? यहाँ "क्" व्यंजन की आवृत्ति हुई है । यह व्यंजन प्रत्येक शब्द का पहला अक्षर है ।

इसके पाँच भेद हैं :-

1. छेकानुप्रास - इसमें एक या अनेक वर्णों का दो बार प्रयोग होता है ।

जैसे :- राम राज्य अभिषेक सुनि हिय हरर्ष नर-नारि ।

2. वृत्यानुप्रास - इसमें एक या अनेक वर्णों का कई बार प्रयोग होता है ।

जैसे :- चारु चन्द्र की चंचल किरर्ण खेल रही हैं जल-थल में ।

Scanned with CamScanner

3. लाटानुप्रास - इसमें ऐसे शब्द या वाक्य दुबारा आते हैं जिनका अर्थ तो एक ही होता है, पर अन्वय करने पर पूरी उक्ति का अर्थ भिन्न हो जाता है ।

पूत सपूत तो का धन संचय ?
पूत कपूत तो का धन संचय ?

(यदि पुत्र सपूत है तो उसके लिए धन संचित करने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि वह अपने लिए स्वयं कमा लेगा । यदि पुत्र कपूत (बुरा) है तो उसके लिए (भी) धन संचित करने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि वह उसे नष्ट कर ही देगा ।)

जैसे :- पराधीन जो जन, नहीं स्वर्ग, नरक ता हेतु ।
पराधीन जो जन नहीं, स्वर्ग नरक ता हेतु ॥

4. श्रृत्यानुप्रास - इसमें मुख के भीतर किसी एक ही स्थान से उच्चरित होनेवाले वर्णों की आवृत्ति होती है ।

जैसे :- बता मुझे भोला भाला मुख किसका ?

5. अंत्यानुप्रास - इसमें चरणों के अन्त के वर्ण या वर्णों में तुक (समानता) होती है ।

जैसे :- राघव बोले देख जानकी के आनन को
"स्वर्गगंगा का कमल मिला कैसे कानन को ?"

2. यमक •

जहाँ शब्द या वाक्यांश एक से अधिक बार आते हैं, लेकिन उनका अर्थ सर्वत्र भिन्न है, वहाँ यमक अलंकार माना जाता है । इसमें एक ही रूप के, पर भिन्न अर्थवाले शब्दों की आवृत्ति होती है । यमक का अर्थ है - दो ।

जैसे :- कनक-कनक ते सौगुणी मादकता अधिकाय ।
वह खाये बौराय जग वह पाये बौराय ॥

इसमें कनक शब्द का प्रयोग दो बार हुआ है और इसके क्रमशः "सोना" और "धतूरा" अर्थ होते हैं । इस पद का भाव यह होता है कि सोना धतूरा फूल

से भी सौ गुणा नशीला है ।

अन्य तथा :- 1. दिया दिया दीवाने ने ।
2. उत्तर मिला उत्तर दिशा से ।

3. उपमा •

जब हम किसी वस्तु का वर्णन करते समय उससे अधिक प्रसिद्ध किसी वस्तु से उसकी समता या तुलना करते हैं, तब उपमा अलंकार होता है ।

जैसे :-

"दमयन्ति रति के समान सुन्दरी है ।" इस वाक्य में "दमयन्ति" की तुलना "रति" से की गयी है ।

उपमा के चार अंग होते हैं :-

1. दमयन्ति :-

जिसकी तुलना की जाती है, उसे उपमेय कहते हैं । यह मुख्य, वर्ण्य या प्रस्तुत विषय होता है ।

2. रति :-

जिसके साथ मुख्य विषय की तुलना की जाय, उसे उपमान कहते हैं ।

3. सुन्दरी :-

जिस गुण में तुलना की जाय, उसे साधारण धर्म या समान धर्म कहते हैं ।

4. के समान :-

जिस शब्द के द्वारा समता प्रकट की जाय, उसे वाचक शब्द कहते हैं ।

उपमा होने के लिए निम्नलिखित बातें आवश्यक हैं :-

1. दो भिन्न-भिन्न वस्तुओं की तुलना की जाती है ।
2. उपमेय से उपमान समता की बात में बढकर होना चाहिए और यह बढकर लोकप्रसिद्ध होना भी चाहिए ।
3. उपमा द्वारा सुन्दर चित्र अंकित करने की चेष्टा की जाती है ।

उपमा के मुख्य दो भेद होते हैं :-

पूर्णोपमा और लुप्तोपमा

Scanned with CamScanner

पुर्णोपमा :-

जहाँ उपमान, उपमेय, समान धर्म और वाचक शब्द आदि चारों बातें विद्यमान हों उसे पूर्णोमा कहते हैं ।

जैसे :-

दमयन्ति रति के समान सुन्दरी है ।

लुप्तोपमा :-

जहाँ उपमान के चारों अंगों में से एक या दो का लोप हो उसे लुप्तोपमा कहते हैं । लुप्त होनेवाले अंग के अनुरूप उस उपमा का नाम होता है ।

1. वाचक लुप्तोपमा :-

इसमें वाचक शब्द का लोप होता है ।

जैसे :-

रति-रमणीय मूर्ति राधा की ।

2. धर्म लुप्तोपमा :-

इसमें समान धर्म का लोप होता है ।

जैसे :-

दमयन्ति रति के समान है ।

3. उपमेय लुप्तोपमा :-

इसमें उपमेय का लोप होता है ।

जैसे :-

कमल के समान सुन्दर । रति के समान सुन्दरी है ।

4. उपमान लुप्तोपमा :-

इसमें उपमान का लोप होता है ।

जैसे :-

हिरनी जैसे भोले नेत्र किसी के नहीं ।

मालोपमा :-

कभी-कभी उत्कर्ष बढाने के लिए एक उपमेय की समता के लिए एक साथ बहुत से उपमान दिये जाते हैं । इस प्रकार उपमा की माला-सी तैयार हो जाती है ।

इसे मालोपमा कहते हैं ।

जैसे :-

हिरनी से मीन से, सुखंजन से, चारु अमल कमल से विलोचन तुम्हारे हैं ।

इसमें आँखों की समता हिरनी, मछली, खंजन पक्षी और कमल के साथ की गयी है ।

4. उदाहरण

जहाँ किसी बात के समर्थन में उदाहरण किसी वाचक शब्द द्वारा दिखाता जाता है, वहाँ उदाहरण अलंकार होता है ।

जैसे :-

1. वह परण्डुवंश प्रदीप यों शोभित हुआ उस काल में,
   सुन्दर सुमन ज्यों पड गया हो कण्टकों के जाल में ।
2. उदित कुमुदिती-नाथ हुए प्राची में ऐसे,
   सुधा-कलश रतनाकर से उठता हो जैसे ।
3. होने लगे रिपु नष्ट यों उसके प्रबल भुजदण्ड से,
   होते तृणादिक खण्ड ज्यों वातूल जाल प्रचण्ड से ।
   (वातूल - आँधी)

5. वक्रोक्ति

जहाँ बात किसी एक आशय से कही जाय और सुननेवाला उससे भिन्न दूसरा अर्थ लगा ले तब वहाँ वक्रोक्ति (वक्र+उक्ति) अलंकार होता है । यह दो प्रकार का होता है :- श्लेष वक्रोक्ति और काकु वक्रोक्ति ।

1. श्लेष वक्रोक्ति :-

कभी किसी शब्द के श्लेष के कारण दूसरा ही अर्थ निकाला जाता है । इस प्रकार की उक्ति में श्लेष वक्रोक्ति होती है ।

जैसे :- लक्ष्मी और पार्वती का निम्नलिखित संवाद श्लेष वक्रोक्ति से भरा है । हर उक्ति में लक्ष्मी भगवान शंकर के बारे में पूछती हैं तो पार्वती श्लेष से उसका तात्पर्य भगवान विष्णु से लेकर जवाब देती हैं ।

Scanned with CamScanner

लक्ष्मी :- कहाँ भिखारी गयो यहाँ ते ?
पार्वती :- होगा वहाँ बलि के निकट ।
(विष्णु का वामनावतार से संबंधित)
लक्ष्मी :- भुजंग-नाह कहाँ बताओ ।
पार्वती :- शेष-शय्या पर जहाँ शयन तिन कीनो ।
लक्ष्मी :- कहाँ पशुपति मोहि दिखाओ ।
पार्वती :- गोकुल डगर पधारो ।
लक्ष्मी :- शैलपति कहँ बताओ ।
पार्वती :- कर में धारे गोबरधन वहिं निहारो ।

2. काकु वक्रोक्ति :-

कभी कहे हुए वाक्य का कण्ठ की ध्वनि या स्वर-भेद के कारण दूसरा अर्थ निकलता है तो उस उक्ति में काकु वक्रोक्ति होती है ।

जैसे :-

1. श्री राम अपनी पत्नी सीता को अपने साथ वन ले जाना नहीं चाहते थे । उन्होंने कहा कि तुम सुकुमारी हो, इसलिए वनवास के योग्य नहीं हो । इसपर सीताजी पूछती हैं :-

"मैं सुकुमारी, नाथ बन जोगू ?"

सीताजी पूछती हैं कि मैं सुकुमारी हूँ और आप मानों सुकुमार नहीं, कठोर हैं । पूछने के ढंग में वक्र उक्ति होने के कारण यहाँ काकु-वक्रोक्ति है ।

2. रावण ने अंगद से अपनी भुजाओं की शक्ति की ढींग मारी तो अंगद ने कहा :-

"सो भुज बल राख्यो, जीतेउ सहस्रबाहु, बलि, बाली ।"

अर्थात तुम इतने बलवान हो कि तुमने सहस्रार्जुन, बलि और बाली को जीता । लेकिन वास्तव में इन तीनों के साथ रावण ने हारा था । यहाँ वक्र उक्ति से हार को जीत बताया गया है ।

3. जब भरत से राज्य ग्रहण का अनुरोध किया गया तब वे व्याकुलता से बोले :-

"मोहि दीन्ह सुख, सुजसु सुराजु, किन्ह कैकेई सब कर काजू ।"

अर्थात मेरे लिए मेरी माँ कैकेई ने सुख, यश, राज्य शासन दिया है । वास्तव

में भरत का संकेत दुख, अपयश और अकार्य से है ।

6. सन्देह

जब उपमेय और उपमान में समता देखकर यह निश्चय नहीं हो पाता कि वास्तव में वह वस्तु उपमान है या उपमेय । तब संदेह अलंकार होता है । इसमें चार बातों की आवश्यकता है :-

1. पहले कोई पदार्थ देखा जाता है ।
2. उसमें दूसरी वस्तु का-सा रूप या गुण पाया जाता है ।
3. दूसरी में पहली या उसके समान अन्य सभी वस्तुओं के होने की संभावना होती है ।
4. परन्तु निश्चय नहीं किया जा सकता कि वह वास्तव में उनमें कौन-सा पदार्थ है । 'धौं, किधौं, कै, कि, अथवा, या' आदि शब्दों द्वारा यह सन्देह प्रकट किया जाता है । कभी-कभी एक वस्तु में अनेक वस्तुओं के समान गुण या रूप भी पाया जाता है ।

जैसे :-

1. मद-भरे ये नलिन-नयन मलीन हैं, अल्प जल में या विकल लघु मीन है ?
2. क्षण भर में देखी रमणी ने एक श्याम शोभा बाँकी ।
   क्या शस्य श्यामल भूतल ने दिखलायी निज नर-झाँकी ?
3. सारी बीच नारी है, कि नारी बीच सारी है,
   कि सारी ही की नारी है, कि नारी ही की सारी है ?

IV. किन्हीं दो छन्दों के लक्षण सोदाहरण लिखिए :- 10

1. चौपाई

सूत्र :-

कल सोरह ज त तजि चौपाई ।

चौपाई मात्रिक छन्द है । इसमें चार चरण होते हैं । प्रत्येक चरण में 16 (सोलह) मात्राएँ होती हैं । चरण के अन्त में जगण (ISI) या तगण (SSI) न

Scanned with CamScanner

होना चाहिए। अर्थात अन्त में गुरु, लघु का क्रम नहीं होना चाहिए। यह तुकान्त होता है।

उदा :-

1. कंकन किंकिनि नूपुर धुनि सुनि,
   कहत लखन सन राम हृदय गुनि।
2. पुरतें निकसी रघुवीर-वधु,
   धरि धीर दये मग में डग द्वै।
   झलकी भरि भाल कनी जल की,
   पुट सूखि गये मधुराधर वै ॥

2. रोला

सूत्र :-

रोल कल चौबीस, रुद्र सरिता यति धारी।

रोला एक मात्रिक छन्द है। इसके प्रत्येक चरण में चौबीस मात्राएँ होती हैं। 11 वीं मात्रा पर यति पडती है। इससे प्रत्येक चरण में (रुद्र) 11 मात्राएँ और (सरिता) 13 मात्राओं के हिसाब से कुद 24 मात्राएँ होती हैं।

उदा :-

1. नर की सन्तति सदा, हीन नर तुल्य रहेगी
   यों ही अत्याचार, असुर के विश्व सहेगी।
2. जिनके आगे ठहर सके जंगी न जहाजी।
   हैं ये वही प्रसिद्ध छत्रपति भूप शिवाजी।

3. सोरठा

सूत्र :-

तेरह सम विषमेश, दोहा उल्टा सोरठा।

सोरठा एक मात्रिक छन्द है। यह दोहे का उल्टा रूप है। इसके विषम (पहले-तीसरे) चरणों में 11 मात्राएँ और सम (दूसरे और चौथे) चरणों में 13

मात्राएँ, इस प्रकार प्रत्येक दल में 24 मात्राएँ होती हैं। इसके सम चरणों में तुक मिलती है।

उदा :-

1. नीलोपल तन स्याम, काम कोटि सोभा अधिक।
   सुनिअ तासु गुन ग्राम, जासु नाम अब खग वधिक।
2. मोहू दीजै मोषु, ज्यौं अनेक पतितन दियो।
   जौ बाँधै ही तोषु, तौ बाँधी अपने गुननु ॥

4. वंशस्थ

सूत्र :-

विचार वंशस्थ रखे ज ता ज रा।

यह एक वर्णवृत्त छन्द है। वंशस्थ में एक जगण (I S I), एक तगण (S S I) जगण (I S I) और रगण (S I S) के क्रम से कुल 12 वर्ण होते हैं।

उदा :-

1. अपूर्व शोभा अवलोकनीय थी।
   असेत जम्बूलिनि-कूल जम्बु थी ॥
2. निसर्ग ने सौरभ ने पराग ने।
   प्रदान की थी अति कांत भाव से ॥

5. हरिगीतिका

सूत्र :-

श्रृंगार दिनकर यति ल गा रख, अन्त में हरिगीतिका।

हरिगीतिका एक मात्रिक छन्द है। इसके प्रत्येक चरण में श्रृंगार-दिनकर (16-12) के यति से कुल 28 मात्राएँ होती हैं। प्रत्येक चरण के अन्त में एक लघु और एक गुरु आते हैं।

उदा :-

1. खग वृन्द सोता है अतः कल, कल नहीं सोता वहाँ।
   बस मन्द मारुत का गमन ही, मौन है खोता जहाँ ॥

Scanned with CamScanner

2. कहँ लौं कहौं कुचाल कृपानिधि, जानत हौं गति जन की ।
तुलसिदास प्रभु ! हरहु दुसह दुख, करहु लाज निज पन की ॥
3. जिनके संग कुबुधि उपजति है, परेत भजन में भंग ।
कहा होत पय पान कराये, विष नहीं जतज भुजंग ॥

6. कुण्डलिया

सूत्र :-

दोहा रोला कुंडलित कर कुंडलिया होय ।

कुण्डलिया एक मात्रिक छन्द है । इसमें कुल छः चरण होते हैं । पहले दो चरण दोहे के दो दल होते हैं और शेष चार रोला के चार चरण हैं । इस प्रकार प्रत्येक चरण में 24 मात्राएँ होती हैं ।

कुण्डलिया में पहले चरण का पहला शब्द और अन्तिम चरण का अन्तिम शब्द एक ही होता है । इसी प्रकार दोहे का अंतिम चरण रोला के शुरू में होता है ।

उदा :-

1. तुकबन्दी का बढ रहा, कविता में अति जोर ।
लगे नाचने मुर्गा भी, समझ स्वयं को मोर ॥ (दोहा)
समझ स्वयं को मोर, अर्थ तक नहीं जानते ।
पढ औरों के गीत, गर्व से रस बखानते ॥
कहें कपिल समझाय, चल रही है दलबन्दी ।
कविता रोती आज, हँस रही है तुकबन्दी ॥ (रोला)
2. बैगला बैठा ध्यान में, प्रातः जल के तीर ।
मानों पतसी तप करे, मलकर भस्म शरीर ॥ (दोहा)
मलकर भस्म शरीर, तीर जब देखी मछली ।
कहैं मीर ग्रसि चोंच, समूची फौरन निगली ॥
फिर भी आवें शरण, वैर जो तज के अगला ।
उनके भी तू प्राण, हरे रे छी छी बगला । (रोला)

V. किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लिखिए :- 30

1. संसार की भाषाओं का पारिवारिक वर्गीकरण प्रस्तुत कीजिए ।

भाषा का वर्गीकरण धर्म, काल, आकृति और परिवार के आधार पर किया जाता है । विज्ञान की दृष्टि से आकृतिमूलक तथा पारिवारिक दोनों वर्गीकरण अति आवश्यक है ।

भाषाओं के अर्थ व रचना तत्व के मिश्रित आधार पर किया गया वर्गीकरण पारिवारिक वर्गीकरण है ।

भाषाओं के पारिवारिक वर्गीकरण के लिए निम्न बातों पर ध्यान देना होगा -

1. ध्वनि रचना 2. पद रचना 3. वाक्य रचना
4. अर्थ रचना 5. शब्द भण्डार 6. स्थानिक विकटता

इनमें प्रमुखतः पद रचना या वाक्य रचना को आधार माना जाता है । भाषा वैज्ञानिकों ने भौगोलिक आधार पर भी भाषाओं का पारिवारिक वर्गीकरण प्रस्तुत किया है । स्पष्टता और सुबोधता के लिए भौगोलिक आधार पर संसार की भाषाओं का वर्गीकरण यों किया गया है -

1. अमेरीका खण्ड
2. प्रशांत महासागर खण्ड
3. आफ्रीका खण्ड
4. यूरेशिया खण्ड

1. अमेरीका खण्ड की भाषाएँ :-

अमेरीका में बोली जानेवाली भाषाओं की संख्या एक हजार से अधिक हैं ।

उत्तरी भाषाएँ :- एस्किमो, इरोक्वाइस, अलगोंकिन, अथवास्कन आदि ।

दक्षिणी भाषाएँ :- कारिव, किचुआ, चाको, तोराडेल, फुआगो आदि ।

आधुनिक भारतीय भाषाएँ फ्रेंच और अँग्रेज़ी भी कनडा और अमेरीका में बोली जाती हैं ।

2. प्रशांत महासागर खण्ड की भाषाएँ :-

प्रशांत महासागर खण्ड के अंतर्गत निम्न भाषाएँ आती हैं ।

1. मलय-बहु द्वीपीय परिवार

Scanned with CamScanner

आधुनिक पद्य

1. मैथिलीशरण गुप्त

मैथिलीशरण गुप्त का जन्म सन् 1886 में उत्तर प्रदेश के झाँसी जिले के अंतर्गत स्थित चिरगाँव नामक गाँव में हुआ था। आपके पिता एक निष्ठावान वैष्णव भक्त तथा व्रजभाषा के मर्मज्ञ कवि थे। अतः उन्हीं संस्कारों का गहरा प्रभाव आप पर भी पड़ा था। कविता करने की प्रेरणा भी आपको अपने पिता से ही प्राप्त हुई थी। आपकी शिक्षा-दीक्षा घर पर ही हुई।

खड़ीबोली कविता के क्षेत्र में आपको प्रकाश में लाने का श्रेय स्वर्गीय महावीर प्रसाद द्विवेदी को प्राप्त है।

आप मुख्यतः राष्ट्रीय कवि के नाम से प्रसिद्ध हैं। आपने सुप्त भारत को जागृत करने का सफल प्रयत्न किया था। आपकी 'भारत-भारती' राष्ट्रीय भावनाओं का मूर्त रूप है। आपने 'साकेत' नाम से एक महाकाव्य का प्रणयन किया था, जो खड़ीबोली के गौरव-ग्रंथों में अपना अनुपम स्थान रखता है। इस काव्य पर आपको हिन्दी साहित्य सम्मेलन का 'मंगला प्रसाद पारितोषिक' तथा हिन्दुस्तानी एकेडेमी का पुरस्कार भी प्राप्त हुआ था। आप संसद के सदस्य भी रह चुके हैं।

रस्कार भी प्राप्त हुआ था। आप संसद के सदस्य भी रह चुके हैं।

आपके अन्य काव्य-ग्रन्थों में 'यशोधरा', 'जयद्रथवध', 'जयभारती', 'पंचवटी', 'पृथ्वीपुत्र', 'किसान' आदि उल्लेखनीय हैं। आप बंगाल भाषा के भी विद्वान थे। माइकेल मधुसूदन दत्त कृत 'मेघनाद-वध' नामक प्रबंध-काव्य का सुन्दर काव्यानुवाद भी आपने प्रस्तुत किया था।

आपका देहावसान सन् 1964 में हुआ।

मनुष्यता

विचार लो कि मर्त्य हो न मृत्यु से डरो कभी,
मरो, परंतु यों मरो कि याद जो करें सभी।
हुई न यों सुमृत्यु तो वृथा मरे, वृथा जिए,
मरा नहीं वही कि जो जिया न आपके लिए।

Scanned with CamScanner

वही पशु-प्रवृत्ति है कि आप आप ही चरे,
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।।
उसी उदार की कथा सरस्वती बखानती,
उसी उदार से धरा कृतार्थ भाव मानती।
उसी उदार की सदा सजीव कीर्ति कूजती,
तथा उसी उदार को समस्त सृष्टि पूजती।
अखंड आत्म भाव जो असीम विश्व में भरे,
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।।
क्षुधार्थ रतिदेव ने दिया करस्थ थाल भी,
तथा दधीचि ने दिया परार्थ अस्थिजाल भी।
उशीनर क्षितीश ने स्वमांस दान भी किया,
सहर्ष वीर कर्ण ने शरीर-चर्म भी दिया।
अनित्य देह के लिए अनादि जीव क्या डरे?
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।।
सहानुभूति चाहिए, महाविभूति है यही;
वशीकृता सदैव है बनी हुई स्वयं मही।
विरुद्धवार बुद्ध का दया-प्रवाह में बहा,
विनीत लोकवर्ग क्या न सामने झुका रहा?
अहा! वही उदार है परोपकार जो करे,
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे!!

शब्दार्थ :-

मर्त्य - मरनेवाला, नश्वर; वृथा -व्यर्थ, बेमतलब; पशु-प्रवृत्ति - जानवरों का-सा व्यवहार; बखानना - प्रशंसा करना; कृतार्थ - कार्य हो जाने से प्रसन्न, संतुष्ट; कूजना - मधुर ध्वनि करना; अखंड - संपूर्ण, पूरा; क्षुधार्थ - भूख से व्याकुल; रतिदेव - एक परम दानी राजा; करस्थ - हाथ में स्थित; दधीचि - एक ऋषि; परार्थ - दूसरे के लिए; उशीनर - देश-विशेष; क्षितीश - राजा; अनित्य - अस्थायी, नश्वर; अनादि - जिसका आदि न हो, जो सदा के लिए हो।

Scanned with CamScanner

अभ्यास

I. प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखिए :–

1. कवि मैथिलीशरण गुप्त पशु-प्रवृत्ति किसे कहते हैं ?
2. दधीचि ने किसके लिए अपना अस्थिजाल दिया ?
3. कवि मैथिलीशरण गुप्त के विचार में मनुष्य कौन हैं ?
4. कवि मैथिलीशरण गुप्त किनको उदार मानते हैं ?

II. कवि-परिचय दीजिए।

III. कविता का सारांश लिखिए।

IV. संदर्भ सहित भाव समझाइए :–

1. विचार लो ..... मनुष्य के लिए मरे।।
2. क्षुधार्थ रतिदेव ..... मनुष्य के लिए मरे।।

पाठेतर कार्य

★ मनुष्यता के संबंध में आप अपना विचार व्यक्त करते हुए वर्ग के अन्य छात्रों से चर्चा कीजिए।

अतिरिक्त जानकारी

➢ खड़ीबोली के स्वरूप-निर्धारण और विकास में गुप्तजी का योगदान अन्यतम है। खड़ीबोली को उसकी प्रकृति के भीतर ही सुंदर-सुघड़ रूप देकर काव्योपयुक्त रूप प्रदान करने का आपने सफल प्रयत्न किया है। आज जिस संपन्न भाषा के हम अनायास उत्तराधिकारी हैं, उसे काव्य-भाषा के पद पर प्रतिष्ठित करनेवाले प्रथम कवि हैं आप।

Scanned with CamScanner

2. जयशंकर प्रसाद

जयशंकर प्रसाद का जन्म सन् 1889 में काशी में हुआ। वे विद्यालयी शिक्षा केवल आठवीं कक्षा तक प्राप्त कर सके, किंतु स्वाध्यायन द्वारा उन्होंने संस्कृत, पाली, उर्दू और अंग्रेज़ी भाषाओं तथा साहित्य का गहन अध्ययन किया। इतिहास, दर्शन, धर्मशास्त्र और पुरातत्व के वे प्रकांड विद्वान थे।

प्रसादजी अत्यंत सौम्य एवं शांत प्रकृति के व्यक्ति थे। वे परनिंदा एवं आत्मस्तुति दोनों से सदा दूर रहते थे। वे बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। मूलतः वे कवि थे, लेकिन उन्होंने नाटक, उपन्यास, कहानी, निबंध आदि अनेक साहित्यिक विधाओं में उच्चकोटि की रचनाओं का सृजन किया है।

प्रसाद कृत साहित्यिक रचनाओं में राष्ट्रीय जागरण का स्वर प्रमुख है। भारतीय संस्कृति का गौरव गुण गान करते कभी नहीं थकते थे। उनकी कविताओं, कहानियों में भारतीय संस्कृति और जीवन मूल्यों की झलक मिलती है। प्रसाद ने कविता के साथ-साथ नाटक, उपन्यास, कहानी, निबंध आदि अनेक साहित्यिक विधाओं में लेखन कार्य किया है। उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं – **अजातशत्रु, स्कंदगुप्त, चंद्रगुप्त, राजश्री, ध्रुवस्वामिनी** (नाटक), **कंकाल, तितली, इरावती** (उपन्यास), **आँधी, इंद्रजाल, छाया, प्रतिध्वनि और आकाशदीप** (कहानी संग्रह), **काव्य और कला तथा अन्य निबंध** (निबंध संग्रह), **झरना, आँसू, लहर, कामायनी, कानन कुसुम और प्रेमपथिक** (कविताएँ)।

आपका देहांत सन् 1937 में हुआ।

मधुमय देश हमारा

अरुण यह मधुमय देश हमारा!
जहाँ पहुँच अनजान क्षितिज को मिलता एक सहारा।
सरस तामरस गर्भ विभा पर नाच रही तरुशिखा मनोहर।
छिटका जीवन हरियाली पर मंगल कुंकुम सारा!
लघु सुरधनु से पंख पसारे शीतल मलय समीर सहारे।
उड़ते खग जिस ओर मुँह किए समझ नीड़ निज प्यारा।
बरसाती आँखों के बादल बनते जहाँ भरे करुणा जल।

Scanned with CamScanner

लहरें टकराती अनंत की पाकर जहाँ किनारा।
हेम कुंभ ले उषा सवेरे भरती ढुलकाती सुख मेरे।
मदिर ऊँघते रहते जब जगकर रजनी भर तारा।

शब्दार्थ :–

अरुण - लाल; मधुमय - मधुर, मीठा; क्षितिज - वह जगह, जहाँ ज़मीन और आसमान मिलते नज़र आते हैं; सहारा - आश्रय, आसरा; तामरस - सोना; विभा - प्रकाश, रोशनी; तरुशिखा - पेड़ों की शाखाओं का अग्र भाग; सुरधनु - इंद्र-धनुष; मलय - दक्षिण का एक पर्वत; समीर - हवा; खग - चिड़िया; नीड़ - घोंसला; अनंत - समुद्र; हेम - स्वर्ण, सोना; मदिर - मस्ती पैदा करनेवाला; रजनी - रात

अभ्यास

I. प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखिए :–

1. कवि प्रसाद के अनुसार अनजान क्षितिज को कहाँ पहुँचने पर सहारा मिलता है?
2. अनंत की लहरें कहाँ टकराती हैं?
3. कवि उड़ते खगों के पंखों की तुलना किससे करते हैं?
4. मनोहर तरुशिखा किसपर नाच रही है?

II. कवि-परिचय दीजिए।

III. कविता का सारांश लिखिए।

IV. संदर्भ सहित भाव समझाइए :–

1. लघु सुरधनु से पँख ..... नीड़ निज प्यारा।
2. हेम कुंभ ले उषा ..... रजनी भर तारा।

पाठेतर कार्य

★ भारत की प्राकृतिक सुंदरता का वर्णन अपनी ओर से करते हुए 15 वाक्यों का एक लेख लिखें और उसे अपने सहपाठियों को पढ़कर सुनाएँ।

अतिरिक्त जानकारी

➢ जयशंकर प्रसाद का लिखा महाकाव्य 'कामायनी' संसार की श्रेष्ठ साहित्य-कृतियों में गिना जाता है।

➢ 'आँसू' प्रसाद जी का श्रेष्ठ गीतिकाव्य है। इसका प्रथम संस्करण सन् 1925 ई. में निकला था।

Scanned with CamScanner

3. महादेवी वर्मा

महादेवी वर्मा का जन्म सन् 1907 को हुआ। हिन्दी के आधुनिक साहित्य में इनका स्थान बहुत ऊँचा है। ये आधुनिक मीरा कहलाती हैं।

महादेवी जी एक संपन्न और सुशिक्षित परिवार की हैं। आपने एम.ए. परीक्षा पास की और महिला-विद्यापीठ, प्रयाग की प्रिन्सिपल बनीं। आपकी वजह से विद्यापीठ की अच्छी ख्याति हुई है। आप 'चाँद' की संपादिका भी रह चुकी हैं। आपने बड़ी दक्षता के साथ उसका संपादन किया।

अब, तक आपकी 'नीहार', 'रश्मि', 'नीरजा', 'सांध्यगीत', 'यामा', 'दीपशिखा', – आदि काव्य–रचनाएँ प्रकाशित हुई हैं। हाल में 'अतीत के चल-चित्र' और 'स्मृति की रेखाएँ' नाम से आपके गद्य–ग्रन्थ भी प्रकाशित हुए हैं। उनके गद्य ग्रंथों का अध्ययन करने से हमें ऐसा लगता है मानो कवियित्री ने कविता-लोक से उतरकर वास्तविक लोक में प्रवेश किया हो।

महादेवी रहस्यवादी कवयित्री हैं। इस दृश्य-जगत से दूर दार्शनिक जगत की इनकी कविता पूर्णतः भावमय होती है। विषाद तथा करुणा की छाया तो प्रत्यक्ष है ही। आपके बारे में रामनरेश त्रिपाठी ने लिखा है – "मीरा के बाद हिन्दी के किसी कवि ने विरह का ऐसा उन्मादकारी वर्णन नहीं किया है जैसा महादेवीजी ने।"

आप कवयित्री ही नहीं, सुन्दर चित्रकार भी हैं। 'सांध्यगीत' और 'दीपशिखा' में आपके रचित सुन्दर चित्र भी छपे हैं। छपाई व सुन्दरता की दृष्टि से तो 'दीपशिखा' एक अमूल्य ग्रंथ है।

आपका निधन सन् 1987 में हुआ।

श्यामल बादल

कहाँ गया वह श्यामल बादल?
जनक मिला था जिसको सागर,
सुधा सुधाकर मिले सहोदर,
चढ़ा व्योम के उच्च शिखर तक
वात संग चंचल!
कहाँ गया वह श्यामल बादल?

Scanned with CamScanner

इन्द्रधनुष परिधान श्याम तन,
किरणों के पहने आभूषण,
पलकों में अगणित सपने ले
विद्युत् के झलमल!
कहाँ गया वह श्यामल बादल?

तृषित धरा ने इसे पुकारा,
विकल दृष्टि से इसे निहारा,
उतर पड़ा वह भू पर लेकर
उर में करुणा नयनों में जल!
कहाँ गया वह श्यामल बादल?

अब हम ढूँढ़ कहाँ पाएँगे?
सब मिल हमको बहकाएँगे!
पल्लव फूल कहेंगे हँसकर
रंगों में खोया वह निश्चल!
कहाँ गया वह श्यामल बादल?

हम बादल कहते सरिता-सर,
कण कण कहता हम उसका घर,
धरती कहती रोम रोम में
समा गया है वह चिर उज्ज्वल!
करुणामय चिरजीवी बादल!
कहाँ गया वह श्यामल बादल?

शब्दार्थ :-

बादल - मेघ, मेह; जनक - जन्मदाता, पिता; सुधा - अमृत, जल; सुधाकर - चन्द्रमा; सहोदर - सगा भाई; व्योम - आकाश; वात - हवा; संग - साथ; चंचल - चलायमान, अस्थिर; परिधान - कपड़ा, वस्त्र; आभूषण - गहना, ज़ेवर; पलक - नयनपट; विद्युत - बिजली; झलमल - चमक-दमक; तृषित - प्यासा; निहारना - देखना; बहकाना - पथ भ्रष्ट करना; समाना - भरना; उज्ज्वल - दीप्तिमान; चिरजीवी - दीर्घायु, अमर

Scanned with CamScanner

अभ्यास

I. प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखिए :-

1. बादल के जनक कौन और सहोदर कौन-कौन हैं?
2. कवयित्री बादल के श्याम तन का परिधान किसे कहती हैं?
3. तृषित धरा ने जब पुकारा, तब बादल नयनों में क्या लेकर भू पर उतरे?
4. धरती के रोम-रोम में कौन समा हुआ है?

II. कवि-परिचय दीजिए।

III. कविता का सारांश लिखिए।

IV. संदर्भ सहित भाव समझाइए :-

1. तृषित धरा ने ..... वह श्यामल बादल?
2. हम बादल कहते ..... चिरजीवी बादल!

पाठेतर कार्य

★ वर्षा-जल के संरक्षण की आवश्यकता पर 20 वाक्य लिखिए।

★ वर्षा के लिए वन-संरक्षण की आवश्यकता संबंधी ज्ञान पुस्तकालय की पुस्तकों से प्राप्त कीजिए।

अतिरिक्त जानकारी

➢ "मैं जो लिखती आ रही हूँ, उसके अतिरिक्त कुछ और लिखना मेरे लिए संभव नहीं था। मनुष्य ही कविता नहीं रचता, कविता भी मनुष्य के व्यक्तित्व का निर्माण करती है और अंत में काल-प्रवाह के जिस तट पर कविता कवि को पहुँचा देती है, वहाँ वह संपूर्ण व्यक्तित्व पा लेता है।" – **महादेवी वर्मा**

Scanned with CamScanner

4. सुमित्रानंदन 'पंत'

पंत जी का जन्म ई. सन् 1900 में उत्तर प्रदेश के अलमोड़ा ज़िले के सुरम्य पर्वतीय अंचल में स्थित कौसानी नामक गाँव में हुआ था। प्रकृति की गोद में आपका शैशव बीता और प्रकृति से ही आपको कविता करने की प्रेरणा मिली। अतः आपकी कविता में प्रकृति की रमणीयता, सरलता, सुकुमारता तथा स्निग्धता के दर्शन होते हैं। आपने स्वतंत्र अध्ययन के द्वारा ही अपने ज्ञान का विस्तार किया।

आप छायावाद तथा प्रगतिवाद के प्रवर्तकों में एक माने जाते हैं। हिन्दी के मूर्धन्य कवि प्रसाद और निराला की पंक्ति में आदर के साथ आपका नाम लिया जाता है। युग की परिस्थितियों के अनुरूप आपकी वाणी में भी परिवर्तन हो गया था। आप मार्क्स तथा गाँधीजी के विचारों से काफ़ी प्रभावित हुए। आप योगी अरविन्द के दर्शन के समर्थक थे।

आपकी भाषा सरस, मधुर एवं कोमल है। खड़ीबोली कविता को लालित्य एवं कोमलता प्रदान करने का श्रेय आप ही को है। आपके कविता-संग्रहों में 'पल्लव', 'वीणा', 'गुंजन', 'युगवाणी', 'ग्राम्या', 'स्वर्णकिरण', 'रजतशिखर' और 'शिल्पी' आपके गीतिनाट्य हैं तथा 'गद्य पथ' नाम से आपके निबंधों का एक संग्रह भी प्रकाशित हो चुका है। काव्य के लिए आप 'ज्ञानपीठ' पुरस्कार से अलंकृत हुए हैं।

आपका देहांत सन् 1979 में हुआ।

चिरंतन जीवन-चक्र

निर्भय हो, निर्भय मानव!
निर्भीक विचर पृथ्वी पर,
विचलित मत हो विघ्नों से,
निज आत्मा पर रह निर्भर!

है पूर्ण सत्य अविनश्वर,
है पूर्ण सत्य रे नश्वर,
है पूर्ण सत्य यह मानव,
है पूर्ण निखिल सचराचर!

Scanned with CamScanner

मत हो विरक्त जीवन से,
अनुरक्त न हो जीवन पर,
जग परिधि मात्र जीवन की,
स्थिति केन्द्र अमर उर भीतर!

बन शांत, धीर, क्षमतामय,
बन स्नेही, सहृदय, सहचर,
गुण-दोष-युक्त जग-जीवन,
निज गुण से पर-अवगुण हर!

बढ़ती नित घृणा घृणा से,
तू उसे प्रेम से दे भर,
है दीप दीप से जलता!
है प्रेम प्रेम पर निर्भर!

निश्चल आत्मा है अक्षय,
निश्चल मृण्मय तन नश्वर
यह जीवन चक्र चिरंतन,
तू हँस-हँस जी, हँस-हँस मर!

शब्दार्थ :-

निर्भय - निडर; विचरना - चलना-फिरना; विचलित - अस्थिर, चंचल; निज - अपना; अविनश्वर - अक्षय, चिरस्थायी; निखिल - संपूर्ण, सारा; सचराचर - चर और अचर के साथ; विरक्त - उदासीन, विमुख; अनुरक्त - आसक्त; परिधि - घेरा, चहारदीवारी; उर - हृदय, वक्षस्थल, छाती; भीतर - अन्दर; सहचर - संगी, सेवक, नौकर; सहृदय - दयालु, परमार्थी; अवगुण - बुराई, ऐब; हरना - दूर करना; अक्षय - अविनाशी, अमर; मृण्मय - मिट्टी का बना हुआ; नश्वर - नष्ट हो जानेवाला; चिरंतन - शाश्वत

अभ्यास

I. प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखिए :-

1. कवि पंत के अनुसार मानव को किसपर निर्भर रहना चाहिए?
2. जग-जीवन के बारे में कवि पंत का विचार क्या है?
3. 'चिरंतन जीवन-चक्र' कविता के अनुसार बढ़ती घृणा को किससे भरा जा सकता है?
4. कवि पंत के अनुसार दूसरों का अवगुण कैसे दूर किया जा सकता है?

Scanned with CamScanner

II. **कवि-परिचय दीजिए।**

III. **कविता का सारांश लिखिए।**

IV. **संदर्भ सहित भाव समझाइए :–**

1. बन शांत ..... पर अवगुण हर!
2. निश्चल आत्मा ..... हँस-हँस मर!

पाठेतर कार्य

★ "मानव को निर्भय होना है, विघ्नों से विचलित न होना है" – इसपर अपना विचार 15 वाक्यों में लिखिए।

अतिरिक्त जानकारी

➢ सन् 1931 ई. में पंत जी कालाकांकर गये और वहीं उनकी युवावस्था के सर्वश्रेष्ठ वर्ष (सन् 1931 से 1940 तक) वानप्रस्थ स्थिति में ज्ञान-साधना में पशु-पक्षियों के बीच व्यतीत हुए। यहीं उन्होंने 'ज्योत्स्ना' जैसे मनःकल्प की सृष्टि की, जो उनकी रचनाओं का केन्द्र माना जाता है।

Scanned with CamScanner

5. सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

कविवर निराला का जन्म सन् 1898 में हुआ। आपने हिन्दी कविता में कई निराली बातों का समावेश किया।

पुराने छन्दों के नियमों को तोड़कर आपने नये छन्द रचे। 'निराला' आपका सार्थक नाम है। हिन्दी में 'मुक्त छन्द' के आप ही जन्मदाता माने जाते हैं।

आपके पिताजी बंगाल में नौकरी करते थे। अतः आपका जन्म और शिक्षा वगैरह वहीं हुई। आप बंगला, संस्कृत और अंग्रेज़ी साहित्य के अच्छे विद्वान थे। दर्शन-शास्त्र (वेदान्त) के भी बड़े पंडित थे। स्वामी विवेकानन्द के विचारों से आप बहुत प्रभावित हुए थे। रवीन्द्रनाथ की कृतियों का आपने गहरा अध्ययन किया है।

आपकी कविता पर संस्कृत, बंगला और अंग्रेज़ी काव्य का और विचारों में दार्शनिकता का स्पष्ट प्रभाव दीखता है। भाषा संस्कृत-बहुला है। अतः जहाँ विचार दार्शनिक हो जाते हैं वहाँ भाषा गंभीर हो जाती है। आपने सब तरह के विषयों पर सब रसों में सफलतापूर्वक रचनाएँ कीं। ख़ासकर आपका वीर और करुण रस अच्छा उतरा है।

'अनामिका', 'सेवा', 'नये पत्ते', 'परिमल' वगैरह कविता-संग्रह प्रकाशित हैं। इनके अलावा आपने कहानियाँ, उपन्यास और निबंध भी लिखे हैं। 'अप्सरा', 'अलका', 'कुल्ली भाट', 'प्रभावी' वगैरह इनके मशहूर उपन्यास हैं। 'राम की शक्ति पूजा' काव्य आपका सुंदर काव्य है।

आपने 'समन्वय' नामक दार्शनिक मासिक पत्रिका का भी सफलतापूर्वक संपादन किया है।

सन् 1961 में आप पंचतत्व में विलीन हुए।

अनंत द्वार

अभी न होगा मेरा अंत
अभी-अभी ही तो आया है
मेरे वन में मृदुल वसंत –
अभी न होगा मेरा अंत।

हरे-हरे ये पात,
डालियाँ, कलियाँ, कोमल गात।
मैं ही अपनी स्वप्न-मृदुल-कर

Scanned with CamScanner

फेरूँगा निद्रित कलियों पर
जगा एक प्रत्यूष मनोहर।

पुष्प-पुष्प से तंद्रालस लालसा खींच लूँगा मैं,
अपने नव जीवन का अमृत सहर्ष सींच दूँगा मैं,

द्वार दिखा दूँगा फिर उनको।
हैं मेरे वे जहाँ अनंत –
अभी न होगा मेरा अंत।

शब्दार्थ :–

मृदुल - कोमल, सुकुमार; पात - पत्ता; गात - अंग; प्रत्यूष - प्रभात, सवेरा; तंद्रालस - ऊँघ के कारण आलसी; लालसा - चाह, इच्छा; सहर्ष - खुशी से

अभ्यास

I. प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखिए :–

1. 'निरालाजी' क्यों ऐसा कहते हैं कि उनका अंत अभी न होगा?
2. 'निराला' पुष्प-पुष्प से किसे खींच लेंगे?
3. 'निराला' कैसा प्रत्यूष जगाएँगे?

II. कवि-परिचय दीजिए।

III. कविता का सारांश लिखिए।

IV. संदर्भ सहित भाव समझाइए :–

1. हरे-हरे ये पात ..... प्रत्यूष मनोहर।

पाठेतर कार्य

★ वसंत ऋतु की प्रकृति की सुंदरता का वर्णन करते हुए 20 वाक्य लिखिए।

अतिरिक्त जानकारी

➢ लिली, चतुर चमार, सुकुल की बीबी – ये 'निराला' के कहानी-संग्रह हैं और अप्सरा, अलका, प्रभावती, निरुपमा – उनके उपन्यास हैं।

➢ 'भावों की मुक्ति छंदों की भी मुक्ति चाहती है। यहाँ भाषा, भाव और छंद तीनों स्वच्छंद हैं।' – 'निराला'

Scanned with CamScanner

6. हरिवंशराय 'बच्चन'

'बच्चन' का जन्म ई. सन् 1907 में इलाहाबाद में हुआ था। आपने एम.ए., बी.टी. की परीक्षा पास की। इंग्लैंड से डाक्टरेट की उपाधि भी प्राप्त की। आप भारत-सरकार के विदेश-मंत्रालय में कार्य भी करते थे।

'बच्चन' ने अपनी विलक्षण प्रतिभा के बल पर हिन्दी काव्य-क्षेत्र में अपने लिए एक विशिष्ट पथ का निर्माण किया है। आपके द्वारा प्रवर्तित हालावाद ने हिन्दी काव्य-जगत् को नयी शोभा प्रदान की। प्रारंभ में आपकी इस नवीन विचारधारा का घोर विरोध हुआ, किन्तु बाद को उस वाद में निहित मर्म से परिचित होने पर हिन्दी-जगत् ने आपका भव्य स्वागत किया।

'बच्चन' ने प्रारंभ में अपनी रचनाओं में मानव-जीवन की तृष्णा को अभिव्यक्त करने का प्रयत्न किया, किन्तु उत्तरोत्तर आपकी दृष्टि व्यापक होती गयी। जीवन की मस्ती के गायक 'बच्चन' ने दार्शनिकता के प्रभाव के कारण उसकी विविधता का भी सहज एवं गंभीर चित्र अपने गीतों के माध्यम से उपस्थित किया है। हृदय के सरल उद्‌गारों को व्यक्त करने में आपको सफलता प्राप्त हुई है।

'मधुशाला', 'मधुबाला', 'मधुकलश', 'बंगाल का काल', 'निशा-निमंत्रण', 'एकांत-संगीत', 'सतरंगिणी', 'खादी के फूल', 'सूत की माला', 'मिलन यामिनी', 'तेरा हार', 'आकुल अंतर', 'सोपान' आदि आपके काव्य-संग्रह हैं। आप एक उच्चकोटि के कवि एवं गीतिकार ही नहीं, अपितु एक सफल अनुवादक भी थे।

आप सन् 2003 में स्वर्ग सिधारे।

प्यार

मैंने चिड़िया से कहा, 'मैं तुम पर एक
कविता लिखना चाहता हूँ।'
चिड़िया ने मुझसे पूछा, 'तुम्हारे शब्दों में
मेरे परों की रंगीनी है?'
मैंने कहा, 'नहीं।'
'तुम्हारे शब्दों में मेरे कंठ का संगीत है?'
'नहीं।'
'तुम्हारे शब्दों में मेरे डैनों की उड़ान है?'

Scanned with CamScanner

'नहीं।'
'जान है?'
'नहीं।'
'तब तुम मुझपर कविता क्या लिखोगे?'
मैंने कहा, 'पर तुमसे मुझे प्यार है।'
चिड़िया बोली, प्यार का शब्दों से क्या सरोकार है?'
एक अनुभव हुआ नया।
मैं मौन हो गया!

शब्दार्थ :–

पर - पंख; रंगीन - चमकदार; कंठ - गला; डैना - पंख; जान - प्राण; सरोकार - संबंध

अभ्यास

I. प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखिए :–

1. 'बच्चन' किसपर कविता लिखना चाहते थे?
2. क्या 'बच्चन' के शब्दों में चिड़िया के कंठ का संगीत है?
3. 'बच्चन' चिड़िया पर कविता क्यों लिखना चाहते थे?
4. 'बच्चन' अंत में मौन क्यों हुए?

II. कवि-परिचय दीजिए।

III. कविता का सारांश लिखिए।

IV. संदर्भ सहित भाव समझाइए :–

1. "तब तुम मुझपर ..... मौन हो गया।"

पाठेतर कार्य

★ प्यार का, शब्दों सरोकार है या नहीं? इसपर 10 वाक्य लिखें और उसे अपने अध्यापक और अन्य सहपाठियों को पढ़ सुनाएँ।

अतिरिक्त जानकारी

➢ बच्चन जी ने 1952 से 54 तक इंग्लैंड में रहकर' केंब्रिज विश्वविद्यालय से पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त की।

Scanned with CamScanner

7. रामधारीसिंह 'दिनकर'

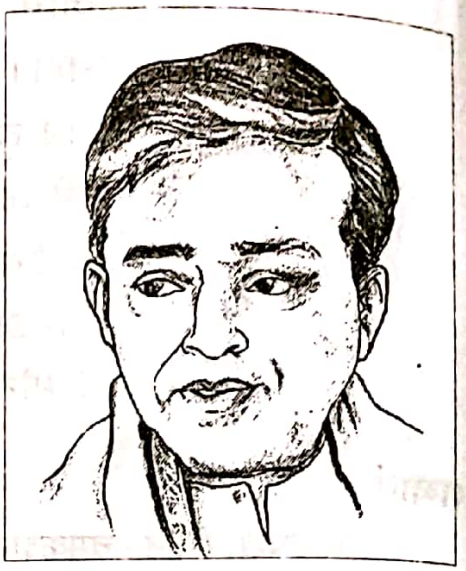

दिनकरजी का जन्म बिहार प्रांत के मुंगेर ज़िले में स्थित सिमरियाघाट नामक स्थान में सन् 1908 में हुआ। दिनकर की प्रखरता और तेजस्विता के दर्शन आपकी कविता में होते हैं। इतिहास आपका प्रिय विषय रहा है। अतः भारत के अतीत की गरिमा का स्मरण दिलाकर वर्तमान के साथ उसकी तुलना करते हुए हमारे पतन पर कविवर आठ-आठ आँसू रोये हैं। आपकी कविताओं में राष्ट्र का स्वर जैसा मुखरित हुआ है, वह अन्यत्र दुर्लभ है। किन्तु आपकी आधुनिक कविताओं में भावना की अपेक्षा चिंतन का दबाव अधिक दिखाई देता है।

दिनकर की कविता में ओज और तेज पढ़ते ही बनते हैं। भाषा पर आपका असाधारण अधिकार है। आपने युद्ध और शांति की समस्या को लेकर चिंतन-प्रधान प्रबन्ध-काव्य का प्रणयन किया है जो 'कुरुक्षेत्र' नाम से विख्यात है। आपकी कीर्ति का हेतु यही काव्य है। आपके अन्य प्रबन्ध-काव्यों में 'रश्मिरथी' और 'ऊर्वशी' उल्लेखनीय हैं। आप संसद के सदस्य तथा भागलपुर विश्वविद्यालय के कुलपति भी रह चुके।

आपकी राष्ट्रीय भावना-प्रधान कविताओं में 'हिमालय', 'नई दिल्ली', 'नेताजी', 'विपथगा', 'सामधेनी', 'नीलकुसुम', 'रसवंती', 'द्वंद्वगीत', 'इतिहास के आँसू' आदि प्रसिद्ध हैं। 'संस्कृत के चार अध्याय', 'मिट्टी की ओर', 'अर्धनारीश्वर' आदि आपके गद्य-ग्रंथ हैं।

सन् 1974 में आपका निधन हुआ।

काँटों में राह बनाते हैं

सच है विपत्ति जब आती है
कायर को ही दहलाती है,
सूरमा नहीं विचलित होते
क्षण एक नहीं धीरज खोते।

विघ्नों को गले लगाते हैं,
काँटों में राह बनाते हैं।

है कौन विघ्न ऐसा जग में
टिक सके आदमी के मग में,
खम ठोंक ठेलता है जब नर
पर्वत के जाते पाँव उखड़।

Scanned with CamScanner

मानव जब ज़ोर लगाता है,
पत्थर पानी बन जाता है।

गुण बड़े एक से एक प्रखर
हैं छिपे मानवों के भीतर,
मेहंदी में जैसे लाली हो
वर्तिका बीच उजियाली हो।

बत्ती जो नहीं जलाता है,
रोशनी नहीं वह पाता है।

शब्दार्थ :–

विपत्ति - संकट, बुरे दिन; कायर - डरपोक, भीरु; सूरमा - वीर, योद्धा; विचलित - अस्थिर, चंचल; धीरज - धैर्य; विघ्न - बाधा, अड़चन; राह - रास्ता, मार्ग; मग - मार्ग; खम ठोंक - दृढतापूर्वक; प्रखर - खरा, उत्तम; वर्तिका - बत्ती

अभ्यास

I. प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखिए :–

1. 'दिनकर' के अनुसार विपत्ति किसको दहलाती है?
2. क्या आदमी के मग में कोई विघ्न टिक सकता है?
3. पत्थर कब पानी बनता है?
4. 'काँटों में राह बनाना' – इसका तात्पर्य क्या है?

II. कवि-परिचय दीजिए।

III. कविता का सारांश लिखिए।

IV. संदर्भ सहित भाव समझाइए :–

1. सच है विपत्ति ..... नहीं धीरज खोते।
2. गुण बड़े एक से ..... उजियाली हो।

पाठेतर कार्य

★ संसार के किसी महापुरुष के, जिन्होंने अपने जीवन में आयी कठिनाइयों को हटाया और आनेवाली पीढ़ी का आदर्श बना, वीरतापूर्ण कार्यों का वर्णन करते हुए 20 वाक्य लिखिए और अपनी कक्षा में दूसरों को पढ़ सुनाइए।

अतिरिक्त जानकारी

➢ 'दिनकर' की गद्य-कृतियों में मुख्य है उनका विराट् ग्रंथ 'संस्कृति के चार अध्याय', जिसमें आपने प्रधानतया शोध और अनुशीलन के आधार पर मानव सभ्यता के इतिहास का, चार मंज़िलों में विभाजित किया है। इस ग्रंथ के लिए आप साहित्य अकादमी के पुरस्कार से सम्मानित हुए।

Scanned with CamScanner

प्राचीन पदय

20. कबीर के दोहे

(1)

हम तुम्हारो सुमिरन करैं, तुम मोहिं चितवौ नाहिं।
सुमिरन मन की प्रीति है, सो मन तुमहीं माहिं।।

शब्दार्थ :– तुम्हरो - तुम्हारा; सुमिरन - स्मरण, ध्यान; चितवौ नाहिं - देखते नहीं हो; सो - वह; माहिं - में, अन्दर

भावार्थ :– (जीवात्मा परमात्मा से कहती है) मैं तो तुम्हारा स्मरण करती रहती हूँ, पर तुम मेरी ओर देखते तक नहीं। स्मरण तो मन की प्रीति है और मेरा मन तुम्हीं में लगा है। अर्थात् मैं हमेशा तुम्हारा ही ध्यान किया करती हूँ।

(2)

हंसा बगुला एकसा, मानसरोवर माहिं।
बगा ढ़ँढोरे माछरी, हंसा मोती खाहिं।।

शब्दार्थ :– बगा - बगुला; ढँढोरे - खोजता है; खाहिं - खाता है

भावार्थ :– एक ही मानसरोवर में हंस भी रहता है और बगुला भी। लेकिन जब बगुला मछली की ही खोज में रहता है, हंस मोती खाता है। अर्थात् स्वभाव के गुण-दोष के अनुसार ही आदमी के कर्म होते हैं।

(3)

हीरा परा बजार में, रहा छार लपटाय।
बहुतक मूरख चलि गये, पारखि लिया उठाय।।

शब्दार्थ :– परा - पड़ा; छार - राख या धूल; बहुतक - बहुत से; पारखि - पारखी, जौहरी

भावार्थ :– बाज़ार में धूल से लिपटा हुआ हीरा पड़ा था। बहुत-से मूर्ख आये और चले गये, लेकिन जब एक जौहरी की निगाह में वह आया तो उसने तुरन्त उसे उठा लिया। आशय है कि ज्ञानी ही किसी वस्तु की क़दर कर सकता है।

Scanned with CamScanner

(4)

दुख में सुमिरन सब करैं, सुख में करै न कोय।
जो सुख में सुमिरन करै, तो दुख काहे होय।।

शब्दार्थ :- कोय - कोई; काहे - क्यों

भावार्थ :- दुख के दिनों में तो सभी ईश्वर को याद करते हैं, लेकिन सुखमय दिनों के आने पर कोई वैसा नहीं करता। अगर लोग सुख में भी ईश्वर को याद रखें, तो फिर दुख के दिन आ ही कैसे सकते हैं?

(5)

छिमा बड़न को चाहिए, छोटन को उत्पात।
कहा विष्णु को घटि गयो, जो भृगु मारी लात।।

शब्दार्थ :- छिमा - क्षमा; बड़न - बड़े; छोटन - छोटे; कहा - क्या; घटि गयो - घट गया, बिगड़ गया

भावार्थ :- जो छोटे होते हैं वे उपद्रवी होते ही हैं, लेकिन बड़ों को क्षमाशील होना चाहिए। भृगु मुनि ने भगवान विष्णु की छाती पर लात मारी थी, इससे उनका क्या बिगड़ गया? क्षमाशीलता के कारण विष्णु की ही महानता प्रकट हुई।

(6)

कथनी थोथी जगत में, करनी उत्तम सार।
कह कबीर करनी सबल, उतरे भौजल पार।।

शब्दार्थ :- कथनी - कथन, उपदेश; थोथी - निकम्मी, सारहीन; करनी - कर्म, आचरण; भौजल - भवसागर

भावार्थ :- इस संसार में उपदेश देना बिलकुल निकम्मी चीज़ है और उत्तम आचरण करना ही सार वस्तु है। कबीर कहते हैं कि उत्तम आचरण के बल पर ही मनुष्य भवसागर से पार उतर सकता है।

(7)

बुरा जो देखन मैं चला, बुरा न मिलिया कोय।
जो दिल खोजा आपना, मुझसा बुरा न कोय।।

शब्दार्थ :- देखन - देखने के लिएं; मिलिया - मिला

Scanned with CamScanner

भावार्थ :– मैं बुराई देखने के लिए संसार-भर में घूमा, पर कोई भी बुरा आदमी नहीं मिला। और जब अपने ही दिल को टटोलने लगा, तो ऐसा अनुभव हुआ कि मुझसे बुरा कोई नहीं हो सकता। तात्पर्य यह है कि मनुष्य को दूसरे में दोष देखने के बजाय अपने ही दोषों को देखना चाहिए।

(8)

माला फेरत जुग भया, फिरा न मन का फेर।
कर का मनका डारि दे, मन का मनका फेर।।

शब्दार्थ :– फेरत - फेरते हुए; जुग - युग, समय; भया - बीत गया; फेर - चक्कर; मनका - मणिमाला; डारि दे - फेंक दे

भावार्थ :– माला फेरते हुए समय बीत गया, फिर भी मन का चक्कर बंद नहीं हुआ, वह तृष्णाओं के पीछे भटकता ही रहता है। इसलिए अब तू हाथ की माला फेंक दे और मन की माला फेर। अर्थात्, साधक को पहले मन विकाररहित करके जप-तप में लगना चाहिए।

(9)

बाँबी कूटे बावरे, साँप न मारा जाय।
मूरख बाँबी ना डसे, सर्प सबन को खाय।।

शब्दार्थ :– बाँबी - साँप के रहने का बिल, वल्मीक; बावरे - पागल; डसे - काटता है

भावार्थ :– पागल! तुम साँप को मारना छोड़कर बिल को मारते हो! रे मूर्ख! बिल प्राणी को नहीं डसता, पर सर्प सबको खा जाता है।

(10)

सीतल शब्द उचारिये, अहम् आनिये नाहिं।
तेरा प्रीतम तुज्झ में, सत्रू भी तुझ माहिं।।

शब्दार्थ :– सीतल - मधुर; उचारिये - बोलिये; अहम् - अभिमान

भावार्थ :– हृदय में अभिमान लाये बिना मीठी वाणी बोलो, क्योंकि शब्द (मीठे और कडुए) के रूप में तेरा प्रियतम (मित्र) और तेरा शत्रु दोनों तुझमें ही हैं।

Scanned with CamScanner

21. तुलसी के दोहे

(1)

तुलसी तरु फूलत फलत, जेहि विधि कालहिं पाय।
तैसे ही गुन दोस गत, प्रगटत समय सुभाय।।

शब्दार्थ :– जेहि विधि - जिस प्रकार; कालहिं पाय - समय पाकर; तैसे ही - वैसे ही; सुभाय - स्वभाव

भावार्थ :– तुलसीदासजी कहते हैं कि जिस प्रकार वृक्ष समय पाकर फलता-फूलता है, उसी तरह हरेक आदमी के स्वभाव के गुण-दोष समय आने पर ही प्रकट होते हैं।

(2)

गुरु तें आवत ग्यान उर, नासन सकल विकार।
यथा निलय गत दीप तें, मिटत सकल अँधियार।।

शब्दार्थ :– आवत - आता है, उदय होता है; ग्यान - ज्ञान; नासन - नष्ट करने के लिए; सकल - सब; विकार - दोष; यथा - जैसे; निलय - मकान

भावार्थ :– मन के सारे मलिन विकारों को नष्ट करने के लिए ही गुरु के द्वारा हृदय में ज्ञान प्रकट होता है, जिस प्रकार कि मकान में रखे हुए दीपक से सारा अंधेरा दूर हो जाता है।

(3)

जो मधु दीन्हे तें मरे, माहुर देउ न ताउ।
जग जीति हारे परसुधर, हारि जीते रघुराउ।।

शब्दार्थ :– मधु - शहद; दीन्हे - देने; माहुर -विष; ताउ - उसे; परसुधर - परशुराम

भावार्थ :– यदि कोई शहद देने मात्र से मर जाता हो, तो उसे (मारने के लिए) विष मत दो। सारे संसार को जीतकर अन्त में परशुराम पराजित हुए; पर रामचंद्रजी (नम्रतायुक्त मीठी वाणी के प्रभाव से) उनसे पराजित होकर भी विजयी हुए।

Scanned with CamScanner

(4)

नीच चंग सम जानिबो, सुनि लखि तुलसीदास।
ढील देत महि गिरि परत, खैंचत चढ़त अकास।।

शब्दार्थ :– नीच - दुष्ट आदमी; चंग - पतंग; जानिबो - समझना चाहिए; लखि - देखकर; महि - पृथ्वी

भावार्थ :– सुनने और देखने के बाद तुलसीदासजी कहते हैं कि दुष्ट आदमी को उस पतंग के समान समझना चाहिए जो ढीला छोड़ने पर पृथ्वी पर गिर पड़ता है और खींचने पर ऊपर आकाश की ओर चढ़ता है।

(5)

तुलसी निज कीरति चहहिं, पर की कीरति खोय।
तिनके मुँह मसि लागिहैं, मिटिहि न मरिहैं धोय।।

शब्दार्थ :– निज - अपना; कीरति - कीर्ति, बड़ाई; मसि - कालिख, कलंक

भावार्थ :– तुलसीदासजी कहते हैं कि जो दूसरे की कीर्ति नष्ट कर अपनी बड़ाई चाहते हैं, उनके मुँह पर ऐसी कालिख लगेगी कि जो धोते-धोते मर जाने पर भी नहीं मिटेगी।

(6)

तुलसी झगड़ा बड़न के, बीच परहु जनि धाय।
लड़ै लोह पाहन दोउ, बीच रुई जरि जाय।।

शब्दार्थ :– परहु - पड़ो; जनि - मत; धाय - दौड़कर; जरि जाय - जल जाता है

भावार्थ :– तुलसीदासजी कहते हैं कि बड़े आदमियों के झगड़े के बीच कभी दौड़कर मत पड़ो। लोहा और पत्थर दोनों परस्पर लड़ते हैं, पर (उन दोनों के संघर्ष से आग निकलने के कारण) उनके बीच आने पर बेचारी रूई जल जाती है।

(7)

भलो कहहिं जाने बिना, बिन जाने अपवाद।
ते नर गाँवर जानि जिय, करहु न हरख बिषाद।।

शब्दार्थ :– जाने - समझे; अपवाद - निंदा; गाँवर - गँवार, मूर्ख

भावार्थ :– जो व्यक्ति किसीको समझे बिना उसे अच्छा कहता है और उसी तरह बिना जाने उसकी निंदा करता है, उस व्यक्ति को मूर्ख समझकर हृदय में हर्ष और विषाद मत करो।

Scanned with CamScanner

(8)

दीरघ रोगी दारिदी, कटुवच लोलुप लोग।
तुलसी प्रान समान तउ, तुरत त्यागिवे जोग।।

शब्दार्थ :– दीरघ रोगी - लंवी व्याधिवाला; दारिदी - दरिद्र, गरीव; लोलुप - लालची; जोग - योग्य, लायक

भावार्थ :– तुलसीदासजी कहते हैं कि लम्वी व्याधिवाला, दरिद्र, कटु वचन वोलनेवाला और लालची आदमी अगर प्राण के समान भी प्रिय हों, तो भी वे तुरंत छोड़ देने योग्य हैं।

(9)

बरखत हरखत लोग सब, करखत लखै न कोइ।
तुलसी भूपति भानुसम, प्रजा भागबस होइ।।

शब्दार्थ :– बरखत - बरसता है; हरखत - प्रसन्न होता है; करखत - खींचता है; लखै - देखता है; भूपति - राजा; भानु - सूर्य; भागबस - भाग्यवश

भावार्थ :– सूर्य पृथ्वी से कब रस खींचता है इसे कोई नहीं देखता, किन्तु जव वही जल पुनः पृथ्वी पर बरसता है तब सब लोग प्रसन्न होते हैं। तुलसीदासजी कहते हैं कि इसी प्रकार राजा भी प्रजा के भाग्यवश (कर आदि के रूप में प्राप्त धन से प्रजा का ही कल्याण करने के कारण) सूर्य के समान होता है।

(10)

नीच निचाई नहिं तजै, जौ पावइ सतसंग।
तुलसी चंदन बिटप बसि, बिनु बिख भै न भुजंग।।

शब्दार्थ :– निचाई - दुष्टता, तजै - छोड़ता है; पावइ - पाकर; विटप-वृक्ष; बसि - रहकर; बिख - विष; भुजंग - सर्प; भै न - नहीं होता है

भावार्थ :– दुष्ट आदमी यदि सत्संगति प्राप्त कर ले, तो भी वह अपनी दुष्टता नहीं छोड़ता है। तुलसीदासजी कहते हैं कि चंदन के वृक्ष पर रहने पर भी सर्प कभी विषरहित नहीं होता।

Scanned with CamScanner

23. रहीम के दोहे

(1)

बिगरी बात बनै नहीं, लाख करै किन कोय।
रहिमन फाटे दुग्ध को, मथै न माखन होय।।

शब्दार्थ :– किन - यत्न; कोय - कोई; फाटे - फटा हुआ; मथै - मथने से

भावार्थ :– कवि रहीम कहते हैं कि जिस प्रकार फटे हुए दूध को मथने से मक्खन नहीं मिलता, उसी प्रकार जो बात एक बार बिगड़ जाती है वह लाख यत्न करने पर भी पुनः नहीं सुधर सकती।

(2)

तरुवर फल नहिं खात है, सरवर पियहिं न पान।
कहि रहीम परकाज हित, संपत्ति सँचहिं सुजान।।

शब्दार्थ :– खात है - खाता है; सरवर - सरोवर; पान - जल; संचहिं - इकट्ठा करते हैं

भावार्थ :– कवि रहीम कहते हैं कि जिस प्रकार वृक्ष स्वयं अपना फल नहीं खाता है और सरोवर अपना जल नहीं पीता है, उसी प्रकार सज्जन भी दूसरों की भलाई के लिए ही धन इकट्ठा करते हैं।

(3)

धनि रहीम जल पंक को, लघु जिय पियत अघाय।
उदधि बड़ाई को कहै, जगत् पियासो जाय।।

शब्दार्थ :– धनि - धन्य, श्रेष्ठ; जल पंक - तालाब; पंक - कीचड़; लघु - छोटा; जिय - जीव, जन्तु; पियत - पीकर; अघाय - तृप्त; उदधि - सागर; बड़ाई - बड़प्पन, महानता; पियासो - प्यास।

भावार्थ :– कवि रहीम कहते हैं कि धन्य है वह तालाब जो छोटा है, उसका पानी पीकर कई जीव-जन्तु जीवित हैं। सागर की तारीफ़ कौन करे, जिसके पास अगाध जलराशि है, किन्तु उससे किसी की प्यास नहीं बुझती। व्यक्ति की महानता उसके गुणों से है न कि उसके आकार से।

Scanned with CamScanner

(4)

एकै साधे सब सधै सब साधे सब जाय।
रहिमन मूलहिं सींचिबो, फूलहिं फलहिं अघाय।।

शब्दार्थ :– मूलहिं - जड में; सींचबो - पानी देना; अघाय - जी-भर

भावार्थ :– एक समय में एक ही कार्य को यत्नपूर्वक करने से क्रमशः सभी कार्य सिद्ध होते हैं, लेकिन एक ही साथ सभी कार्यों में लग जाने पर एक भी कार्य पूरा नहीं होता, अर्थात् सभी विगड़ जाते हैं। रहीम कहते हैं, वृक्ष की जड को ही (नियमित रूप से) सींचने पर वह जी-भर फूल और फल देता है।

(5)

जो रहीम उत्तम प्रकृति, का करि सकत कुसंग।
चंदन विष व्यापत नहीं, लपटे रहत भुजंग।।

शब्दार्थ :– कुसंग - बुरी संगति; व्यापत नहीं - प्रभाव नहीं पड़ता है; भुजंग - सर्प

भावार्थ :– कवि रहीम कहते हैं कि यदि आदमी का स्वभाव उत्तम है, तो बुरी संगति उसका क्या विगाड़ सकती है? सर्प के लिपटे रहने पर भी उसके विष का चंदन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

(6)

रहिमन याचकता गहै, बड़े छोट है जात।
नारायण हू को भयो, बावन आँगुर गात।।

शब्दार्थ :– याचकता गहै - याचक बनने पर; है जात - हो जाता है; आँगुर - अंगुल

भावार्थ :– कवि रहीम कहते हैं कि याचक बनने पर बड़े भी छोटे हो जाते हैं। भगवान जब बलि के यहाँ याचना करने गये थे, उनका भी शरीर बावन अंगुल का हो गया था।

(7)

बड़े बड़ाई ना करैं, बड़े न बोलैं बोल।
रहिमन हीरा कब कहै, लाख टका मेरो मोल।।

Scanned with CamScanner

शब्दार्थ :– टका - रुपया; मेरो - मेरा

भावार्थ :– कवि रहीम कहते हैं कि जो महान होते हैं वे अपनी बड़ाई या प्रशंसा खुद नहीं करते और न बढ़-बढ़कर बातें करते हैं। हीरा श्रेष्ठ रत्न होने पर भी कब कहता है कि मेरा दाम लाख रुपया है?

(8)

रहिमन जिह्वा बावरी, कहि गइ सरग पताल।
आपु तो कहि भीतर गयी, जूती खात कपाल।।

शब्दार्थ :– जिह्वा - जीभ; बावरी - पगली; सरग - आकाश; आपु - खुद; कपाल - खोपड़ी

भावार्थ :– कवि रहीम कहते हैं कि जीभ तो पगली है, वह बिना विचारे आकाश-पाताल की बातें कहकर खुद तो भीतर चली गयी और खोपड़ी को जूतियाँ खाकर उसका कुफल भोगना पड़ा।

(9)

जाल परे जल जात बहि, तजि मीनन को मोह।
रहिमन मछरी नीर का, तऊ न छाँडत छोह।।

शब्दार्थ :– मीनन - मछलियाँ; तऊ - फिर भी; छोह - प्रेम

भावार्थ :– कवि रहीम कहते हैं कि जाल को जल से निकालने पर जल तो मछलियों का मोह छोड़ अलग होकर बह जाता है, लेकिन मछलियाँ पानी का प्रेम नहीं छोड़तीं। वे उसके वियोग में तड़प-तड़पकर मर जाती हैं।

(10)

जब लगि वित्त न आपने, तब लगि मित्त न कोई।
रहिम अंबुज अंबु बिन, रवि ताकर रिपु होइ।।

शब्दार्थ :– वित्त - धन; मित्त - मित्र; अंबु - जल; ताकर - उसका

भावार्थ :– कवि रहीम कहते हैं कि जिस प्रकार जल के अभाव में सूर्य भ कमल का शत्रु हो जाता है, उसी प्रकार धन नहीं है, तो कोई भी हमारा मित्र नहीं बनता।

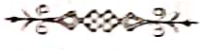

Scanned with CamScanner